संजय की कलम से ..

नष्टोमोहा : स्मृतिर्लब्धा

जैसे अहंकार, अहंता से पैदा होता है, वैसे ही मोह, ममता से पैदा होता है। दैहिक दृष्टि से देखने वाले मनुष्य का दैहिक बच्चों से ममता का भाव उत्पन्न होता है अर्थात् पहले मनुष्य स्वयं को देह मानता है और फिर इस देह द्वारा उसने जो बच्चे पैदा किये हैं, उन्हें वह 'मेरे अपने' बच्चे मानता है और इसके परिणामस्वरूप उन बच्चों के साथ रहते-रहते, उनमें उसका राग, उसकी ममता, उसका मोह पक्का हो जाता है, जो कि योगाभ्यास में भी विघ्न डालता है और उसे आत्मिक सुख तथा परमात्मिक आनन्द नहीं लेने देता। अत: मनुष्य का दूसरे के हाड़-मांस में जो मोह है, वह ईश्वर के प्रति द्रोह अथवा विद्रोह है अथवा बिछोह है।

मोह दैहिक संबंधियों में भी हो सकता है और देह के प्रयोग में आने वाली वस्तुओं में भी। एक मक्खी गंदगी पर बैठकर उससे मोह करने लगती है। मनुष्य उसे वहाँ से उठाने-उड़ाने का यत्न करता है तो भी वह वहाँ से नहीं उड़ती, फिर-फिर वापस आ जाती है। वैसा ही हाल आज मनुष्य का है। कफ-रक्त, मल-विकार से भरे इस कलियुगी शरीर से अपना घनिष्ठतम संबंध मानकर उससे वह ऐसा मोह, ऐसा राग अथवा स्नेह जोड़ लेता है कि मक्खी को भी मात कर देता है। मक्खी गंदगी से उठकर दूसरे किसी स्थान पर जब बैठती है तो उसे भी गंदा कर देती है, वह वहाँ भी बीमारी फैलाती है। इससे भी कहीं अधिक खतरनाक वह मनुष्य है जो मोह का कीड़ा अथवा ममता की मक्खी बना हुआ है। वह सबके पास जाकर देह-अभिमान का संक्रामक रोग फैलाता है और जन्म-जन्मान्तर के लिए अन्य आत्माओं को भी अपने विकारी वचनों से तथा अपनी दूषित चलन से रोगी और भोगी बना देता है। अत: जैसे समझदार व्यक्ति गंदी मक्खी को स्वयं से दूर रखता है, वैसे ही उसे चाहिए कि वह ममता की मक्खी अथवा मोह के जीवाणुओं को भी स्वयं से दूर रखे।

गीता-ज्ञान का मुख्य उद्देश्य ही मनुष्य को नष्टोमोहा: स्मृतिर्लब्धा बनाना है क्योंकि जब तक मनुष्य का मोह नष्ट न हो तब तक वह ईश्वरीय स्मृति अर्थात् योग में पूर्ण रीति स्थित नहीं हो सकता और जब तक उसका योग पूरा न हो तब तक उनकी सद्गति नहीं हो सकती। ❖

अमृत-सूची

- एक परमात्मा, एक विश्व परिवार *(सम्पादकीय)* 4
- प्लेटिनम जुबली महोत्सव 6
- प्रश्न हमारे, उत्तर दादी जी के.. 8
- पुरुषोत्तम संगमयुग एवं.....10
- 'पत्र' संपादक के नाम 13
- कर्म विधान 14
- प्रभु ने हाथ थाम लिया.....16
- स्वस्थिति श्रेष्ठ तो 17
- उत्तम खेती..... 20
- बाबा ने बनाया विजयी 22
- कोहिनूर बनना चाहती हो..... 23
- अबूझमाड से आबू तक 26
- लालच और मृत्यु..... 27
- संस्कारों की रास मिलन..... 28
- सचित्र सेवा समाचार..... 30
- समय पर मिली मदद 32
- ज्ञान दान योजना.....33
- सचित्र सेवा समाचार 34

सदस्यता शुल्क

भारत	वार्षिक	आजीवन
ज्ञानामृत	80 /-	2,000/-
वर्ल्ड रिन्युअल	80/-	2,000/-
विदेश		
ज्ञानामृत	800 /-	8,000/-
वर्ल्ड रिन्युअल	800/-	8,000/-

शुल्क केवल '**ज्ञानामृत**' अथवा '**द वर्ल्ड रिन्युअल**' के नाम से ड्राफ्ट या मनीऑर्डर द्वारा भेजने हेतु पता है- संपादक, ओमशान्ति प्रिंटिंग प्रेस, ज्ञानामृत भवन, **शान्तिवन- 307510 (आबू रोड) राजस्थान।**

- शुल्क के लिए सम्पर्क करें -
09414006904, 09414154383

सम्पादकीय ..✍

एक परमात्मा, एक विश्व परिवार

भगवान एक है, यह सार्वभौमिक सत्य है। विश्व की दसों दिशाओं में इस सत्य को स्वीकार किया जाता है।

जो व्यष्टि में, वही समष्टि में

कहा जाता है जो नियम व्यष्टि (इकाई) पर लागू होता है वही समष्टि (समूह) पर भी लागू होता है। संपूर्ण विश्व अनेक छोटी-बड़ी इकाइयों में विभाजित है। परिवार इस विश्व की सबसे छोटी इकाई है। किसी भी परिवार का मुखिया एक ही होता है, दो-चार नहीं। परिवारों से मिलकर सभा, सोसायटी, संस्थान आदि बनते हैं। इनके भी अध्यक्ष या मुखिया एक-एक व्यक्ति ही होते हैं। संस्थानों से मिलकर राज्य और राज्यों से मिलकर देश का निर्माण होता है। राज्यों के मुख्यमंत्री तथा देश का प्रधानमंत्री या राष्ट्रपति भी एक-एक ही होते हैं। आज तक किसी ने नहीं देखा कि किसी देश के दो राष्ट्रपति या दो प्रधानमंत्री हों या दो राजा हों। अत: देशों से मिलकर बने इस संपूर्ण विश्व का सर्वोच्च भी एक ही है और वह है भगवान। भगवान से ऊँचा या उसके बराबर कोई नहीं है। वही सर्वशक्तिवान है और सर्व आत्माओं का अति स्नेही परमपिता है।

गुप्त रहता है बीज

श्रीमद्भगवद् गीता के कथन के अनुसार इस सृष्टि को एक विशाल उल्टा वृक्ष मानें तो भी वृक्ष का बीज तो एक ही होता है। बड़ या पीपल का पेड़ भले कितना भी विशाल हो पर उनका बीज एक ही होता है और वह भी राई के दाने से भी छोटा। इसी प्रकार सात महाद्वीपों, सात सागरों, हजारों नदियों और जंगलों में फैला, 700 करोड़ की आबादी वाला यह विश्व चाहे कितना भी विशाल क्यों न हो, इसका रचनाकार एक ही है। जैसे बीज से दो कोंपल फूटकर दृश्यमान जगत में वृद्धि को पाती जाती हैं और विशाल से विशालतर होती जाती हैं उसी प्रकार यह विश्व भी एक बीज रूप परमात्मा से प्रारंभ होकर, श्रीराधा- श्रीकृष्ण रूपी दो कोंपलों के द्वारा साकार संसार में विस्तार को पाते-पाते विशालतम रूप को ग्रहण कर लेता है। परमात्मा पिता बीज की तरह अपने अस्तित्व को गुप्त ही रखते हैं। अंतर इतना है कि वह जड़ बीज धरती के नीचे छिपा रहता है और परमात्मा पिता धरती के ऊपर, दूर, बहुत दूर, सूर्य चांद तारागण से भी पार ब्रह्मलोक में उपस्थित रहते हैं।

यथा पिण्डे तथा ब्रह्माण्डे

यदि हम 'यथा पिण्डे तथा ब्रह्माण्डे' शब्द को लें तो इसका भी साधारण-सा अर्थ यही निकलता है कि जैसे पिण्ड (शरीर) को आत्मा चलाती है, उसी प्रकार, ब्रह्माण्ड भी परमात्मा पिता की अध्यक्षता में संचालित है। जैसे हरेक शरीर में एक ही आत्मा निवास करती है, इसी प्रकार अखिल ब्रह्माण्ड के अधिनायक एक ही परमात्मा पिता हैं। पिण्ड में आत्मा सर्वोच्च स्थान भ्रकुटि में निवास करती है, परमात्मा पिता भी सर्वोच्च स्थान ब्रह्माण्ड में निवास करते हैं।

आत्मिक नाते से एक परिवार

जैसे भगवान एक हैं, वैसे ही उनकी रचना यह विश्व भी एक है। एक ही रचयिता की रचना होने के कारण यह सारा विश्व एक परिवार ही है। हम कहते हैं, वसुधैव कुटुम्बकम्। हम सब एक कुटुम्ब के हैं, कैसे, पहले आत्मिक नाते से इस बात को जानेंगे। हम कहते हैं, हिन्दू-मुस्लिम-सिख-ईसाई, आपस में हैं भाई-भाई। भाई-भाई हैं आत्मिक नाते से।

रक्त की अभिन्नता

प्राकृतिक रचना की दृष्टि से देखा जाये तो भी सभी मानव एक ही परिवार के सदस्य हैं। परिवार उसे माना जाता है जहाँ खून का संबंध स्थापित हो सके। संसार के किसी भी कोने के मानव का खून, संसार के किसी भी कोने के अन्य मानव को चढ़ाया जा सकता है। जहाँ तक खून

के ग्रुप की बात है वह तो पिता और पुत्र का भी अलग-अलग हो सकता है अन्यथा जाति, कुल आदि के आधार पर खून की भिन्नता नहीं है।

भिन्नता आई कैसे?

हम जानते हैं, एक ही केन्द्र से निकलने वाले जल की कालांतर में अनेक धारायें बन जाती हैं। लंबे काल से यदि दो सगे भाई भी बिछुड़ जायें और अपनी-अपनी पहचान खो दें तो उनमें बेगानापन आ जाता है। कुछ ऐसा ही इस विश्व परिवार के साथ भी हुआ है। बीज और तने की सही जानकारी न होने के कारण कालांतर में निकली शाखाएँ अपने को ही मूल पेड़ मान बैठी हैं और इस प्रकार शाखायें, उप-शाखायें, टहनियाँ आपस में टकराने लगी हैं।

बेहद विश्व परिवार की भावना

पेड़ जड़ होता है, उसका बीज बोल नहीं सकता, नहीं तो वो बताता कि कौन-सी शाखा पहले आई, कौन-सी बाद में अर्थात् पेड़ का क्रमवार विकास की जानकारी देता। परंतु, सृष्टि रूपी वृक्ष का बीज भगवान चेतन है। जब वह देखता है कि वैश्विक भावना को भूलकर उसके बच्चे छोटे-छोटे समूहों में बँट गये हैं और एक-दूसरे से कट गये हैं, उनका प्रेम संकुचित और स्वार्थपरक हो गया है। विभिन्न धर्म-जातियों की बात तो छोड़िये, एक ही जाति, धर्म और परिवार के लोग भी आपस में फूटे बैठे हैं। ऐसे माहौल में परमात्मा पिता प्रजापिता ब्रह्मा के साकार तन में अवतरित हो जाते हैं और मनुष्यों को हदों से निकालकर एक विश्व-परिवार की भावना से, एक बेहद के परिवार में जोड़ लेते हैं। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय एक ऐसा ही ईश्वर रचित वैश्विक परिवार है जिसमें हर धर्म, भाषा, देश के लोग आपस में आत्मिक स्नेह से आध्यात्मिक उन्नति में रत हैं।

कथनी नहीं, व्यवहार भी

इस विद्यालय के साकार संस्थापक पिताश्री प्रजापिता ब्रह्मा ने अपने हद के परिवार को ईश्वरीय श्रीमत से बेहद में बदल लिया, उन्हें देख उनके परिवारों के सदस्य बदले और फिर समाज, देश के लोग बदलते गये। एक बार उनकी सुपुत्री (दादी निर्मलशान्ता) को बाबा पर लगाये गये एक झूठे मुकदमे के सिलसिले में कोर्ट में जाना पड़ा। उन दिनों बहनें कोर्ट में नहीं जाया करती थीं। जज ने उन्हें देखा तो पूछा, बहनजी आपके कितने भाई हैं (जज का मतलब था कि भाई कोर्ट में आ जाता)? जज का सवाल सुनकर दादी जी सोचने की मुद्रा में खड़ी रही। जज ने पुन: पूछा, बहनजी, कितने भाई हैं? दादी ने कहा, सोच रही हूँ, कितने बताऊँ? जज ने आश्चर्य से भरकर कहा, यह भी कोई सोचने की बात है? दादी ने कहा, जब आप मुझे बहनजी कह रहे हैं तो एक भाई तो आप ही हैं, और भी दुनिया में सारे भाई ही तो हैं, कितनी संख्या बताऊँ? जज के ऊपर इस उत्तर का इतना प्रभाव पड़ा कि उसने मुकदमा खारिज कर दिया, फिर दादी के आग्रह पर बाबा से मिला और बाबा का प्रशंसक बन गया। उसे महसूस हुआ कि विश्व परिवार की भावना केवल कथनी रूप में नहीं बल्कि व्यवहार में भी बाबा में और उनके अनुयायियों में रची-बसी है। बाबा तथा अन्य भाई-बहनों के जीवन की, इस प्रकार की (बेहद विश्व परिवार की व्यवहारिक धारणा की) और भी बहुत सारी घटनाओं का उल्लेख किया जा सकता है।

आज जबकि भ्रष्टाचार सहित अनेकानेक समस्याओं से देश और विश्व जूझ रहा है, सभी में यदि विश्व परिवार की भावना घर कर जाये तो समस्याओं को छूमंतर होने में देरी नहीं है। थोड़े जल में काई और कीड़े पैदा होते हैं, समुद्र के बेहद जल में नहीं। मेरे-मेरे की शूद्र भावनायें ही समस्याओं को जन्म देती हैं। आज आवश्यकता है भावनाओं को बेहद रूप देने वाले प्रशिक्षण की। राजयोग की शिक्षा ऐसा ही प्रशिक्षण है जिससे हम देहभान की हदों को तोड़ आत्मिक नाते से सारे विश्व को परिवार की नजर से देखना और नज़र से निहाल करना सीख जाते हैं।

– ब्रह्माकुमार आत्म प्रकाश

प्लेटिनम जुबली महोत्सव

ब्रह्माकुमारीज़ संस्था के गौरवशाली 75 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में इंद्रधनुषी सजावट से उभरे शांतिवन में आयोजित प्लेटिनम जुबली महोत्सव के **स्वागत सत्र (4 नवंबर 2011)** में डायमंड हॉल के सुसज्जित मंच पर विभिन्न क्षेत्रों से आये संत सुशोभित हुए। स्वागत संबोधन में संस्थान के सूचना एवं जनसंपर्क निदेशक ब्र.कु. करुणा ने 75 वर्षों की गौरवमयी यात्रा पर प्रकाश डालते हुए कहा कि एक ईश्वर और समूचे विश्व को एक कुटुंब मानते हुए सद्भावना का संदेश सर्वत्र प्रसारित करने के लिए ही प्लेटिनम जुबली समारोहों की शृंखला प्रारंभ की गई है। यूरोपीय देशों में संस्था की निदेशिका ब्र.कु. जयंती ने स्वागत संबोधन के साथ-साथ प्लेटिनम जुबली के विभिन्न पक्षों को उजागर किया।

हरियाणा के स्वास्थ्य मंत्री राव नरेन्द्र सिंह, सांसद देवजी भाई पटेल व करनजी मठ बेलगाँव के गुरुसिद्ध महास्वामी ने संस्था के इस प्रयास की भरपूर सराहना करते हुए कहा कि पूरे विश्व में महिलाओं द्वारा संचालित एकमात्र संस्था ब्रह्माकुमारीज़ ने विश्व शान्ति एवं सद्भाव की स्थापना का जो बीड़ा उठाया है, उसे एक महायज्ञ मानते हुए जाति, धर्म, समुदाय, राजनीतिक विचारधारा की संकीर्णता से ऊपर उठकर सभी को इसमें आहुति डालनी चाहिए। विश्व जिस दौर से गुजर रहा है, उसमें ऐसे प्रयासों का महत्व और अधिक बढ़ जाता है। संस्था के भागीरथी प्रयासों को सर्वत्र समर्थन एवं सहयोग मिले, इसके लिए उन्होंने अपनी शुभकामनायें दी।

संस्था की 95 वर्षीय मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी जानकी ने बड़प्पन एवं विनम्रता का मिश्रण प्रस्तुत करते हुए प्रत्येक संत के पास जाकर उनका अभिवादन किया और यहाँ पधारने पर आभार जताया। संस्था महासचिव ब्र.कु. निर्वैर, बीबीसी लंदन की पूर्व वरिष्ठ पत्रकार डेनिस लारेंस, ब्र.कु. मोहिनी, ब्र.कु. मुन्नी समेत बड़ी संख्या में लोग

उपस्थित थे।

5 नवंबर, उद्घाटन सत्र: उद्घाटन सत्र में हिन्दू महासभा के अध्यक्ष स्वामी चक्रपाणि ने कहा कि सभी धर्मों और संप्रदायों का मूल मंत्र शांति ही है जिसका प्रसार संयुक्त राष्ट्र संघ से संबद्ध यह संस्था विश्व भर में कर रही है। हीरों का व्यवसाय छोड़कर दादा लेखराज ने मनुष्यों को हीरा बनाने का जो लक्ष्य निर्धारित किया था, उसकी प्राप्ति की ओर यह संस्था दादी जानकी के कुशल एवं प्रबुद्ध नेतृत्व में तेजी से कदम उठा रही है। 95 वर्ष की आयु में दादी जी जिस परिपक्वता एवं दूरदर्शिता से कार्य कर रही हैं, उसे देखकर सहज ही उम्मीद जताई जा सकती है कि भगवा व श्वेत वस्त्रधारी संतों का संगम प्रदूषणमुक्त समाज की संरचना कर पाने में सफल होगा।

सर्व संत समाज की ओर से स्वामी चक्रपाणि, जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी ओंकारानन्द सरस्वती, जगद्गुरु सिद्ध लिंग स्वामी व स्वामी समर्पणानन्द गिरी आदि वरिष्ठ संतों ने इस अवसर पर दादी जी को उनकी अमूल्य आध्यात्मिक सेवाओं के सम्मानार्थ प्रतीक चिन्ह भेंट करते हुए अभिनन्दित किया।

पंचमशैली मठ दावनगिरी के जगद्गुरु सिद्ध लिंग स्वामी ने कहा कि देश में अनेक विश्वविद्यालय हैं जो मात्र डिग्रीयाँ थमाते हैं लेकिन माउंट आबू का यह विश्व विद्यालय एकमात्र ऐसी संस्था है जो त्याग की नींव पर

आधारित है और आध्यात्मिकता, नैतिकता तथा मानव सेवा की शिक्षा देता है।

संस्था की मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी जानकी ने कहा कि आज मुझे असीम खुशी है कि देशभर से वे सम्माननीय संत प्लेटिनम जुबली के अवसर पर एकत्र हुए हैं जिनसे लाखों लोगों को आध्यात्मिक मार्ग दर्शन एवं आदर्श जीवन जीने का संदेश प्राप्त होता है।

इससे पूर्व श्रीराम नाटक निकेतन सिकन्दराबाद की कन्याओं ने अत्यंत सुंदर सामूहिक नृत्य प्रस्तुत करके रंग जमा दिया। विभिन्न देशों से आये प्रतिनिधियों ने जब अपने-अपने देश के राष्ट्रध्वज लहराते हुए उद्घाटन परेड में भाग लिया तो डायमंड हॉल में उपस्थित हजारों भाई-बहनों ने करतल ध्वनि की। संस्था के विभिन्न प्रभागों ने भी अपनी उपलब्धियों के बारे में चित्रमय झांकी प्रस्तुत की।

अमृत महोत्सव के **तीसरे दिन (6 नवंबर)** विश्व कल्याण परिषद् के अध्यक्ष जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी ओंकारानन्द सरस्वती ने सभी ब्रह्माअनुयायियों एवं मठाधीशों से आह्वान किया कि वे ब्रह्माकुमारी संस्था से जुड़कर स्वपरिवर्तन से विश्व परिवर्तन के अभियान में सहभागी बनें। यहाँ आगमन के अपने अनुभव को अद्भुत बताते हुए उन्होंने कहा कि भारत की आबादी एक सौ तीस करोड़ का आंकड़ा पार कर चुकी है लेकिन बहुत कम लोग ईश्वरीय कृपा के पात्र बन पाये हैं। यहाँ प्रवास के दौरान सहज ही सतयुग का एहसास हो रहा है। जो लोग इस संस्था से जुड़ेंगे वे अवश्य ही शांति, एकता व प्यार की संपन्नता से धनी हो जायेंगे। उन्होंने दादी प्रकाशमणि को इस अवसर पर याद करते हुए कहा कि इस विश्व विद्यालय द्वारा किसी विशेष समुदाय का लोकाचार या दर्शन शैली नहीं सिखाई जाती बल्कि मानव का सही अर्थों में चरित्र निर्माण किया जाता है जिसकी वर्तमान समय में सर्वाधिक जरूरत है।

संस्था प्रमुख राजयोगिनी दादी जानकी ने संतों से आह्वान किया कि सभी संत और अन्य समाज के लोग एक

मंच पर आकर नये विश्व निर्माण की प्रक्रिया में सहभागी बनें। सभी संतों ने एकमत से स्वीकार किया कि बिना आध्यात्मिकता को जीवन में उतारे शांति का मार्ग प्रशस्त नहीं हो सकता है।

कर्नाटक से आये जगद्गुरु श्री मल्लिकार्जुन मुरुगराजेन्द्र महास्वामी ने कहा कि आध्यात्मिकता के सहारे ही मूल्यों को पुनर्स्थापित किया जा सकता है। इंसान को परमात्मा ने ज्ञान दिया लेकिन वह ज्ञान से विमुख होकर पशु सम व्यवहार कर रहा है। लोगों की जीवनशैली इतनी बदल गई कि वे अंदर की भावनाओं को दबाते हुए मुसकराने का स्वांग मात्र रचते हैं। ऐसे लोगों को आध्यात्मिकता ही जीवन का आदर्श समझायेगी। मानवता सबसे बड़ा धर्म है और इसी धर्म के पालन का संदेश इस तपोभूमि द्वारा प्रसारित किया जा रहा है। जर्मनी से आई ब्र.कु. सुदेश ने निष्कर्ष के तौर पर कहा कि विश्व निर्माण की आधारशिला आध्यात्मिकता ही है।

षटदर्शन साधू समाज ट्रस्ट, हरिद्वार के अध्यक्ष महंत दर्शन सिंह त्यागमूर्ति ने ब्रह्माकुमारी संस्था द्वारा मानव मात्र के कल्याण के लिए की जा रही सेवाओं की भरपूर प्रशंसा की एवं सक्रिय रूप से सहयोग देने का आश्वासन दिया। संस्था की संयुक्त मुख्य प्रशासिका दादी रतनमोहिनी ने उपस्थित अतिथियों के प्रति आभार जताया।

अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के सचिव तथा कालाहांडी उड़ीसा के सांसद भक्त चरणदास सहित कई अन्य महानुभावों ने भी अपने-अपने विचार व्यक्त किये।

प्रश्न हमारे, उत्तर दादी जी के

दिव्यबुद्धि के वरदान से विभूषित आदरणीया दादी जानकी जी, हर प्रकार के प्रश्नों के उत्तर देकर आत्मा को संतोष से भर देती हैं। बुद्धिवानों की बुद्धि बाबा ने उन्हें ऐसी कला प्रदान की है कि वे उलझे कर्मों की गुत्थियाँ सुलझाकर समाधानस्वरूप बना देती हैं। प्रस्तुत हैं भाई-बहनों द्वारा पूछे गए प्रश्नों के दादी जानकी द्वारा दिये गये उत्तर ... – सम्पादक

प्रश्नः- विकर्म रहा हुआ है, उसका प्रमाण क्या है?

उत्तरः- योग काम चलाऊ नहीं करो, सेवा भी काम चलाऊ नहीं करो। क्या सबूत है कि योग से मेरे विकर्म विनाश हुए हैं! अभी मेरे से कोई काम ऐसा न हो जो नियम मर्यादा के अनुकूल न हो। नियम मर्यादा और सभ्यता आइना है। सभ्यता है, पहले आप। पहले मैं, यह सभ्यता नहीं है। विकर्म रहा हुआ है तो घड़ी-घड़ी मूड को चेंज कर देता है। ज्ञानी योगी आत्मा की मूड चेंज नहीं हो सकती। कोई भी बात है तो उसे योगबल से खलास करना है।

प्रश्नः- सही अर्थों में अमूल्य जीवन कैसे बने?

उत्तरः- वैल्यू उसकी जो सच्चा है, जिसमें झूठ का नामोनिशान नहीं है। चलते-फिरते सच दिखाई पड़ता है, उसके अंदर भावना है, परमात्मा सत्य है। सत्यम् शिवम् सुन्दर मेरे बाबा का रूप है। सत्य है, कल्याणकारी है, ब्यूटीफुल है। उन जैसा सुंदर कोई है ही नहीं। वह काले को भी गोरा बना देता है। इतना सच में शक्ति है। तो मैं ऐसा सच्चा हूँ? सबके प्रति कल्याण की भावना है? ऐसा ब्यूटीफुल बच्चा हूँ तो वैल्यू होगी। वरच्युज लाइफ में हैं तो वैल्यू है, रास्ता क्लीयर है, कहाँ भटकता-मूँझता नहीं है। औरों को भी रास्ता दिखाता जाता। उसके पीछे जाना अच्छा लगता है। कन्फ्यूजन नहीं है। कहते भी हैं, सच की नइया डोलेगी पर गैरंटी है, डूबेगी नहीं। सत्य नारायण की कथा मशहूर है। नइया और खिवैया की कई कहानियाँ भक्ति में भी सुनी हैं। बोट चलाने वाला कभी डरता नहीं है, पार ले जाता है। पढ़ा-लिखा है तो अभिमान है, बोटमैन अनपढ़ा है, अभिमान नहीं है। विशेषता का भी अभिमान न हो। कोई कहता, मेरी यह विशेषता है, भगवान ने यह विशेषता दी, यह भूल गया। अपना अभिमान आया तो जैसे भगवान की दी हुई विशेषता उसे ही वापस दे दी।

प्रश्नः- आत्मा में कमज़ोरी आने का कारण क्या है?

उत्तरः- साइलेन्स की शक्ति से समर्थ संकल्पों की शक्ति का पता चलता है। सर्वशक्तिवान के बच्चे हैं, सीट पर सेट हैं तो कर्मेन्द्रियाँ आर्डर मानती हैं। देह-अभिमान के वश शक्ति गई, मेरा बाबा भूल गया, कमज़ोरी आ गई। मैं आत्मा, मेरा बाबा, बस, शक्ति आ गई। अभिमान खत्म हो गया, तो मेरे अनुभव से अनेक आत्माओं को शक्ति मिल गई। इतना स्पष्ट ज्ञान जब बुद्धि में आया तब योग भी सहज हो गया, लाइन क्लीयर हो गई। पेट्रोल अगर क्लीन (साफ) न हो तो मोटर गाड़ी कैसे चलेगी! पानी भी अगर स्वच्छ न हो तो पियेंगे कैसे! खाना भले अच्छा मिले लेकिन पीने वाले पानी में थोड़ी भी मिट्टी हो तो! इसलिए मीठे बाबा ने आइना दे दिया कि समझदार वह जो व्यर्थ को अभी समाप्त करे। कई व्यर्थ को व्यर्थ नहीं समझते हैं, उसे अच्छा समझकर यूज़ करते हैं। सच्ची दिल से कोई अपना पुरुषार्थ देखे, होंगे रांग पर झुकेंगे नहीं। रियलाइज़ नहीं करेंगे। अंदर उल्टा

नशा रहेगा इसलिए बाबा कहते अहंकार को मार, अभिमान को छोड़। कल की कोई बात है, उसे मैं तो भूल जाऊँ, औरों को भी भुला दूँ। मैं भूलेंगी तो मेरा फायदा। मेरे से कोई भूल हो गई, महसूस हुआ, फिर से कभी न हो। फिर दूसरों के लिए भी ऐसी अच्छी भावना हो, ऐसा संकल्प न हो कि यह तो सुधरेगा ही नहीं, इसको समझाना व्यर्थ है, यह बात करने वाला कौन? अभिमान, जो अंदर ही अंदर घुसा हुआ है। इस देहभान से मरना होगा, बाबा का बनना होगा।

प्रश्नः- दूसरे के कर्म देख संकल्प न चलें, क्या करें?

उत्तरः- कर्म अकर्म विकर्म की गति बाबा बच्चों को समझाता है। कर्म दूसरे के, संकल्प मेरे चलें, यह भी ठीक नहीं है..यह संकल्प भी अभिमान वाला है। तो कितनी रियलाइजेशन चाहिए। इसमें न दादी बनना चाहिए, न दादा बनना चाहिए। स्टूडेन्ट लाइफ दी बेस्ट। बड़ा होना बड़ा दुख पाना। बाबा के बच्चे हैं ना। बच्चे कहेंगे बाबा बैठा है, मैं क्यों संकल्प चलाऊँ! जब ब्रह्मा बाबा ही संकल्प नहीं चलाता तो मैं क्यों चलाऊँ।

प्रश्नः- सेवा में थकावट न आए, उसकी विधि क्या है?

उत्तरः- जितनी ऊँची पढ़ाई है, जैसी पालना है ऐसे सच्चे दिल से सेवा करते हैं, सेवा का बोझ नहीं है। बोझ है तो थकावट है। ड्यूटी समझेंगे तो थकावट होगी। सच्चे दिल से सेवा करो तो थकावट नहीं होगी। बाबा एक ही टाइम में कितना दे रहा है। जिसको जो ज़रूरी है एक्यूरेट सब दे देता है। इतना सहज करके देने वाला बाबा सिखा रहा है, तुम ऐसे करो। बहुत मेहनत नहीं सिखाओ, किसको सहजयोगी बनाओ। इतनी योग की पावर हो जो संग में आते ही रंग लग जावे।

प्रश्नः- अन्तिम गति श्रेष्ठ हो, उसके लिए क्या तैयारी करें?

उत्तरः- जहाँ हमारा मन होगा वहाँ हमारा तन और धन होगा। धन का मुझे क्या करना! धन सेवा के लिए आता है। मुझे कुछ नहीं चाहिए। अन्त मते सो गते, शरीर छोड़ने के पहले सब तैयारियां कर ली हैं। मोहजीत बन गये हैं। सबसे बड़ा भारी विकार है सूक्ष्म मोह। काम भी चला गया, बाबा-बाबा कहा, पवित्रता आ गई। पवित्रता के बिगर तो यहाँ बैठ भी न सके। थोड़ी भी वृत्ति-दृष्टि चंचल होगी तो बाबा यहाँ से भगा देगा। वह ऐसे संगठन में बैठ नहीं सकेगा। अगर अन्दर गुस्सा होगा तो संगठन में रहने में उसको मज़ा नहीं आयेगा, दूसरों को भी मज़ा नहीं आयेगा। एक बार गुस्सा करेंगे तो 6 मास तक भूलेगा नहीं। इसलिए बड़ा सम्भालना है। फिर लोभ तो रख ही नहीं सकते। बाबा का बच्चा लोभ क्यों रखे, क्या करेंगे! कहाँ रखेंगे ! गुस्सा करना तो बड़ा भारी दोष है। गुस्से की नेचर ज़रा भी मेरे में न हो। कोई हैं जो गुस्से को गुस्सा नहीं समझते हैं, कहेंगे हमने यह बात कही थी, आपने समझी नहीं... जोश में आकर सिद्ध करेंगे। इसमें अपने को अन्दर बहुत मीठा बनाना होता है।

प्रश्नः- सफलता के लिए सरल-सा सूत्र बताइये।

उत्तरः- सतयुग में तो राजाई होगी यहाँ के पुरुषार्थ से। अभी भी प्रकृति अधीन नहीं बना सकती। वह हमारे अधीन रहे। प्रकृति को अधीन बनाओ, तुम उसके अधीन नहीं बनो। 5 तत्वों का यह शरीर है, 5 तत्वों की दुनिया है। हर एक का स्वभाव अपना-अपना है, उसके अधीन नहीं बनो। बाबा से शक्ति लेकर गुणवान बनो। काम होगा, तो क्रोध भी जरूर होगा। मेरे मनपसन्द काम नहीं हुआ, थोड़ी भी ईर्ष्या है तो क्रोध जरूर होगा। इसलिए मन-वाणी-कर्म को बाबा से मिलाओ। बाबा ने कभी नहीं कहा कि मेरा विचार यह है, बाबा हमेशा कहेगा - बच्चे, बाबा ने यह समझाया है। बाबा के बोलने की कापी करना सीख लो तो भी सफलता साथ देती है। हमारा समय सफल हो गया तो वायुमण्डल भी अच्छा हो जाता है।

पुरुषोत्तम संगमयुग एवं परमात्मा की कार्यपद्धति और कार्यप्रणाली

● ब्रह्माकुमार रमेश शाह, मुंबई (गामदेवी)

विविध धर्मों, शास्त्रों व मनुष्यों के मन में परमात्मा के स्वरूप, अवतरण व कर्त्तव्य आदि को लेकर जितनी भ्रांतियाँ हैं उतनी भ्रांतियाँ अन्य किसी बात में नहीं हैं। इसी कारण कई मनुष्य परमात्मा के अस्तित्व में श्रद्धा नहीं रखते और नास्तिक बन जाते हैं। हिन्दू धर्म में चार्वाक ऋषि ने जो शास्त्र बनाये हैं, उनमें परमात्मा के बारे में कुछ नहीं कहा है। महात्मा बुद्ध जिनको हिन्दू धर्म में परमात्मा के एक अवतार के रूप में गाया जाता है, उनसे भी जब उनके मुख्य शिष्य सारनाथ ने पूछा कि आपने परमात्मा तथा उनके अस्तित्व के बारे में अपने विचार नहीं बताये, हम क्या मानें? तब बुद्ध जी का उत्तर यही था कि इस दुनिया के अंदर दुख, अशांति, हिंसा इतना अधिक है कि उसे दूर करने में ही मेरा सारा समय चला जाता है। परमात्मा के बारे में विचार करने का मुझे समय ही नहीं मिला।

कई आत्मायें परमात्मा से सौदा करते हैं व मन्नत माँगते हैं कि मैं पास हो गया तो आधा किलो मिठाई चढाऊँगा..मेरे बेटे की नौकरी लग जाये तो चाँदी का छत्र चढाऊँगा आदि-आदि अनेक प्रकार के प्रलोभन भगवान को देते हैं। जब उनकी इच्छा पूरी नहीं होती है तो परमात्मा के बारे में अपशब्द बोलना शुरू कर देते हैं। इसी आधार पर एक मुहावरा भी है कि भगवान के घर देर है, अंधेर नहीं। इस मुहावरे को लेकर अनेक लोगों के मुख से मैंने सुना है कि भगवान जल्दी न्याय नहीं करते, न्याय करने में बहुत देरी करते हैं। ईश्वरीय परिवार में भी जब दादियाँ तथा बड़े भाई-बहन जल्दी निर्णय नहीं करते तब कइयों के मन में नेगेटिव विचार चलते हैं। जल्दी निर्णय न होने के कारण उलझन उत्पन्न होती है और परमात्मा की कार्यप्रणाली पर शंका करते हैं।

अत: परमात्मा की कार्यप्रणाली व कार्यपद्धति के बारे में थोड़ा सोच-विचार करने की ज़रूरत है। शुरूआत में मैं अक्सर प्यारे ब्रह्मा बाबा से रूहरिहान करता था और बाबा को कहा करता था कि बाबा आपका परमात्मा तो ड्रामा के बंधन में बँधा हुआ है लेकिन हमारे शास्त्रों में परमात्मा को कर्तुम, अकर्तुम..अन्यथाकर्तुम कहा गया है अर्थात् परमात्मा अंसभव को संभव तथा संभव को असंभव कर सकता है। परमात्मा सर्वशक्तिवान है और जो चाहे सो कर सकता है। उनके हाथ में सब कुछ है। तब ब्रह्मा बाबा ने मुझसे कहा कि बच्चे, ऐसा कोई भगवान नहीं है जो ड्रामा के बंधन से परे अर्थात् मुक्त हो।

इस बात के आधार पर हमें स्वीकार करना पड़ता है कि परमात्मा ड्रामा के बंधन में बंधे हुए हैं। तब परमात्मा हमें हमारे कर्मों की गति और उसके दंड आदि से कैसे सहज रूप से मुक्त कर दें। सन् 1962 में राधी माता के भोग के समय जब राधी माता स्वयं संदेशी के तन में आई और बताया कि मेरा जन्म बहुत बड़े रॉयल घराने में होने वाला है, तब मैंने उससे पूछा कि आपका जन्म कहाँ होने वाला है, वह स्थान आदि बताइये। तब उन्होंने बताया कि मुझे यह सब मालूम है, बाबा ने मेरी बुद्धि की लाइन खुली रखी है। जब मैं आप सभी से मिलने आ रही थी तब शिवबाबा ने कहा कि रमेश बच्चा तुमसे तुम्हारे नये पते के बारे में सवाल ज़रूर पूछेगा। मैंने बाबा से पूछा कि क्या मैं रमेश को सही पता बता दूँ तब बाबा ने कहा कि

बच्ची, यह मैं तुम पर छोड़ता हूँ किंतु मैं कहता हूँ कि यह सृष्टि ड्रामा रीयल है, आर्टीफिशियल नहीं। इसलिए मैं सब कुछ जानते हुए भी ड्रामा की मर्यादा में रहकर बच्चों से व्यवहार करता हूँ। तब मैंने राधी माता को कहा कि मैं भी शिवबाबा की बात मानता हूँ इसलिए आप कहाँ जन्म लेंगे, यह मत बताइए। मुझे पूर्ण निश्चय है कि आपने अपने जन्म की जो बात बताई है, वह सत्य होगी। जब सृष्टि रूपी ड्रामा रीयल है तब उसकी मर्यादा में रहकर ही परमात्मा को अपनी कार्यप्रणाली अपनानी पड़ती है।

इसी प्रकार जब अहमदाबाद में नया-नया सेन्टर खुला और ब्रह्माकुमारी ऊषा बहन ने उसे दो साल संभाला तब वहाँ क्लास में डॉ.के.एम.चौकसी आते थे, उनके पास मधुबन से ब्रह्मा बाबा बीमार बहनों को इलाज के लिए अहमदाबाद भेजते थे। ऊषा बहन डॉक्टर के साथ मिलकर बहनों का इलाज करती थी। एक दिन डॉक्टर चौकसी ने ऊषा बहन को कहा कि ब्रह्माकुमारी बहनें इतना योग करती हैं तथा 1937 से समर्पित जीवन व्यतीत करती हैं, पवित्र भोजन खाती हैं फिर भी इनको बीमारी क्यों होती है? अपनी योगशक्ति के आधार से रोग को ठीक क्यों नही कर सकती या योगशक्ति से उनको रोग होना ही नहीं चाहिए फिर दवाइयाँ क्यों लेती हैं? ऊषाजी ने डॉक्टर चौकसी के प्रश्न को पत्र द्वारा आबू भेजा। डॉक्टर चौकसी क्लास के बुद्धिमान व अनन्य जिज्ञासु थे। ब्रह्मा बाबा ने जवाब में ऊषा बहन को लिखा कि मुरली में मैंने यही सुनाया है कि योग से विकर्म सूली से काँटा हो सकता है किंतु सूली जैसा विकर्म शून्य अर्थात् संपूर्ण भस्म नहीं होता। क्योंकि बीमारियाँ पूर्व जन्मों के हिसाब-किताब के कारण होती हैं तो काँटे जैसी थोड़ी चुभन तो रहेगी ही अत: बच्चों को अनुभव होना चाहिए कि काँटे रूप में भी शरीर को इतना सहन करना पड़ता है तो पूर्ण रूप से सूली जैसा हिसाब-किताब सहन करना पड़े तो कितना कष्ट होगा। काँटे रूपी चुभन का दुख भी इसलिए सहन करना पड़ता है ताकि विकर्म का रहा हुआ लेश मात्र प्रभाव भी संपूर्ण रूप से समाप्त हो जाये व संपूर्ण पवित्र आत्मा को धर्मराजपुरी में न जाना पड़े बल्कि सीधा परमधाम जा सके। परमकृपालु परमपिता परमात्मा की यह कार्यप्रणाली व कार्यपद्धति न समझने के कारण तथा काँटे जैसा रहा हुआ हिसाब-किताब चुक्तू करने के लिए काँटे के समान चुभने वाले दुख को सहन करने के लिए लोग तैयार नहीं हैं। तब हम सबके मन में परमात्मा की कार्यप्रणाली व पद्धति के बारे में शंकाएँ उत्पन्न होती हैं। शिवबाबा की चाहना तो यही है कि मेरा हरेक बच्चा यहाँ ही हर प्रकार का हिसाब-किताब चुक्तू कर विनाश के बाद धर्मराजपुरी में न जाकर सीधा परमधाम चला जाये।

धर्मराजपुरी में क्या-क्या सजाएँ हो सकती हैं, उसके बारे में पूरा ब्यौरा गरूड़ पुराण में लिखा है। ऐसी सज़ाएँ लाडले बच्चों को सहन न करनी पड़ें इसलिए परमात्मा योग की शक्ति द्वारा अपने बच्चों को संपूर्ण आत्माभिमानी व देही अभिमानी बनाना चाहते हैं। परमात्मा की इस युक्ति को न समझने के कारण ऐसा कह देते हैं कि परमात्मा के कार्य में देरी होती है। इसलिए शिवबाबा ने मुरलियों में कहा है कि मैं जो हूँ, जैसा हूँ, मुझे कोटों में कोई और कोई में भी कोई जान सकता है। हमारी दादियाँ व वरिष्ठ भाई-बहनें भी इसी श्रीमत के आधार पर तुरंत निर्णय नहीं देना चाहते बल्कि थोड़ा सहन कराकर उस आत्मा को संपूर्णता के रास्ते में जाने का मार्गदर्शन देते हैं। हमारे वरिष्ठ भाई-बहनों को भी श्रीमत के आधार पर

ही कार्य करना होता है। ईश्वरीय ज्ञान में एक सिद्धांत है कि यदि आपने गलत निर्णय दे दिया व उसके आधार पर सामने वाले ने गलत कार्य किया तो परिणामस्वरूप उत्पन्न होने वाले हिसाब-किताब का आधा दंड निर्णय देने वालों को भी सहन करना पड़ता है और इसलिए श्रीमत का पालन करने वाले वरिष्ठ दादियों, बहन-भाइयों के बारे में हमारे भाई-बहनें शंका न उठावें। यह न कहें कि हमारे बड़े निर्णय करने में देरी करते हैं। किंतु यह याद रहे कि बड़ों की व परमात्मा की शुभभावना है कि हम सब संपूर्ण पवित्र बन जाएँ व कोई भी हिसाब-किताब न रहे और अंत में परमधाम सीधा चले जायें। इस भावनायुक्त कार्यप्रणाली को न समझने के कारण मन में कभी-कभी नकारात्मक भावना उत्पन्न होती है।

परमात्मा की कार्यप्रणाली व पद्धति को समझने में कभी-कभी थोड़ा अन्य कई बातों का भी अनुभव करना पड़ता है। मिसाल के तौर पर जब हम सन् 1971 में विदेश सेवा के लिए निकले तब भारत सरकार से हरेक को 6 डॉलर खर्च करने की ही अनुमति मिली थी परंतु विदाई के समय शिवबाबा ने कहा था कि मैंने आप सबके लिए सब प्रकार का प्रबंध करके रखा है। जैसे बटन दबाने से बिजली सहज रोशनी देती है वैसे ही आपको सहज रूप से हर बात का प्रबंध मिल जायेगा। हम पहले ब्रसेल्स में रहे, बाद में लंदन, न्यूयार्क में रहे। वहाँ हमें कुछ भी खर्चा करना नहीं पड़ा। न्यूयार्क में प्रदर्शनी के लिए भी हमको मुफ्त हॉल मिल गया जिसका वैसे किराया प्रतिदिन 300 डॉलर था। जब कार्यक्रम के लिए पर्चा छपवाने गये तो पहली बार नौ डॉलर का खर्च करना पड़ा। तब मैंने दूसरे दिन योग में शिवबाबा से रूहरिहान की और नौ डॉलर के खर्च का आध्यात्मिक रहस्य पूछा, तब बाबा ने बताया कि आप बच्चों को अनुभव होना चाहिए कि मेरी मदद नहीं होती तो यहाँ की इतनी महंगाई की दुनिया में कितना खर्च करना पड़ता। उसका अनुभव करने के लिए 9 डॉलर का खर्च आपको करना पड़ा। इस प्रकार कई बार शिवबाबा हम बच्चों को अपनी शक्ति का अनुभव कराते ताकि हम अपनी शक्ति के अभिमान में न आ जाएँ तथा खुद को व औरों को दुखी न बनावें इसलिए शिवबाबा काँटे जैसे दुख का अनुभव कराकर सूली के दुख से हमको मुक्त करते हैं।

एक गीत भी इसी संदर्भ में है,

'ईश्वर अपने साथ है,
डरने की क्या बात है।
सदा सफलता साथ हमारे,
हाथ में उसके हाथ है।
समय से पहले भाग्य से ज्यादा
बोलो किसने पाया है।
तेरा था जो तुझे मिला है,
कोई तो छीन न पाया है।'

यह गीत भी सिद्ध करता है कि भाग्य में लिखी बातों को हमें सहन करना ही पड़ता है, कारण कि इस सृष्टि में प्रत्येक आत्मा का अलग-अलग पार्ट है और हर आत्मा अपना पार्ट बजा रही है। इस दृष्टिकोण से देखें तो जो भी समस्यायें आती हैं, उन्हें अपने पिछले जन्मों का हिसाब-किताब समझें और अपने पुरुषार्थ की गति में तीव्रता लायें और यह न कहें कि भगवान के घर देर है किंतु अंधेर नहीं। वास्तव में भगवान के घर न तो देर है और न अंधेर है, यह तो सिर्फ हमारी आशाओं के प्रमाण कार्य संपन्न नहीं होता तो स्वार्थवश हम ऐसा बोल देते हैं। व्यर्थ चिंतन जो हमारी कमज़ोरी है, उस पर संपूर्ण विजय प्राप्त करना यही हमारा लक्ष्य होना चाहिए। हम आगे बढ़ते हैं तो परमात्मा हमें पूर्ण रूप से मदद करने के लिए सदा ही तत्पर हैं। इसलिए हमें परमात्मा की कार्यपद्धति और कार्यप्रणाली को पूर्ण रूप से समझना जरूरी है। ❖

'पत्र' संपादक के नाम

मैं ज्ञानामृत पत्रिका को पिछले तीन-चार वर्ष से नियमित रूप से पढ़ रहा हूँ। निश्चित ही यह पत्रिका शिव बाबा के सृष्टि परिवर्तन के कार्य में, आम आदमी की मनोवृत्ति को धीरे-धीरे बदलकर उसमें नये सतयुगी संस्कार भरने में विशेष योगदान दे रही है। वैसे तो पूरी पत्रिका की जितनी भी तारीफ की जाये, वह कम है फिर भी हर पत्रिका में विशेष रूप से भ्राता रमेश शाह जी का लेख तो जैसे दिल पर छप जाता है। कई बार तो लेख बाबा के साथ की अनुभूति करा देता है तो कभी-कभी जीवन-यात्रा में एक नई दिशा की ओर ले जाता है। कभी समस्याओं में निर्णय लेने की कला सिखा देता है। मार्च अंक में 'मन जीते जगतजीत' मन को भा गया, मन को सुमन बनाने की विशेष प्रेरणा मिली। 'संबंध एक परमपिता से' लेख पढ़कर तो ऐसा लगा कि शिव बाबा का बच्चा बनने में यह लेख काफी मददगार हो सकता है।

– नीरज, हिसार

मैं ज्ञानामृत का लगभग 8 वर्षों से नियमित पाठक हूँ। इसमें प्रकाशित आदरणीया दादियों, बहनों और भाइयों के सभी लेख अत्यंत हृदयग्राही, प्रेरणादायी और रोचक होते हैं। ज्ञानामृत का अंक एक बार हाथ में आने के बाद पूरा एक ही बार में पढ़कर समाप्त करने का मन बना रहता है। आदरणीय रमेश भाई जी के लेख अंतर्मन को छूने वाले रहते हैं। आदरणीया दादी जी के उत्तर, मानव जीवन के उद्धारक रूप होते हैं। मार्च, 2011 अंक में ब्र.कु.नरेश भाई का लेख 'संबंध एक परमपिता से' और अप्रैल, 2011 अंक में प्रकाशित आदरणीय सूर्य भाई का 'व्यर्थ से मुक्ति' लेख बहुत ही प्रेरणादायी और हृदयग्राही है। स्वस्थ आध्यात्मिक जीवन की प्रेरणा के लिए उनको मेरी बधाई और साधुवाद स्वीकार हो।

– ब्र.कु.कामता, लखनऊ

ज्ञानामृत मासिक पत्रिका आत्मा, परमात्मा के मध्य सेतु का कार्य कर रही है। यह भौतिकवाद के मायाजाल से निकालकर, स्वयं की पहचान देकर आत्मशुद्धि व आत्म-चिंतन हेतु ज्ञानार्जन में वृद्धि कर रही है। स्वच्छ, स्वस्थ एवं सभ्य जीवन प्राप्त करने हेतु ज्ञानामृत प्रशंसनीय है।

– संजय वर्मा 'दृष्टि',
मनावर (म.प्र.)

अप्रैल, 2011 अंक में प्रकाशित लेख 'अध्यात्म की नज़र से हनुमान जी' लेखक के वृहद् अध्ययन तथा अनुभूति से पूर्ण है। हनुमान जी की उड़ान तथा संजीवनी बूटी का आध्यात्मिक रहस्य नवीनता लिये हुए है। हनुमान जी का हृदय ईश्वरीय प्रेम तथा आस्था से ओत-प्रोत है। लेखक का यह अनूठा प्रयास है कि हम हनुमान जी के सभी चारित्रिक गुणों को अपने जीवन में आत्मसात् करने का प्रयास करें।

– मालिनी शर्मा, इंदौर

सितंबर, 2011 अंक में 'जीवन के खेल को आनंद से भर लो' लेख जीवन को हलका और आनंदमय बनाने के सरल और व्यवहारिक फार्मूले दे गया। 'हृदय के वैरी – क्रोध और तंबाकू' लेख स्वास्थ्यवर्द्धक और ज्ञानवर्द्धक रहा। प्रत्येक बार संजय की कलम कमाल कर जाती है और इसे पढ़कर एक नवीन, स्वच्छ सोच, संस्कार का निर्माण होता है।

– कुमार विक्रम, नारनौंद, हिसार

सितंबर, 2011 अंक का संपादकीय 'माफ करो, दिल साफ करो' बहुत असरदार, अचूक और डिटरर्जेन्ट जैसा है जो पुराने धब्बे धो डालता है और मन को तरोताजा बनाता है। 'दुकड़म इच्छामि' यह बहुत शिक्षाप्रद मंत्र है जिससे मन की मैल धुल जाती है। 'पुरुषोत्तम संगमयुग और धर्मस्थान व धर्मगुरुओं की आमदनी का अंदाज' लेख ने आँखें खोल दी।

– लक्ष्मीनारायण, बुर्ला

कर्म विधान

● ब्रह्माकुमार प्रेम प्रकाश, दिल्ली (नोएडा)

भौतिक संसार के लिए महान वैज्ञानिक न्यूटन के तीसरे लॉ ऑफ मोशन (Newton's third law of motion) के अनुसार, हर क्रिया की प्रतिक्रिया होती है (to every action there is equal and opposite reaction)। इस साधारण सत्य को समझने के बाद दुनिया के अंदर अनेक प्रकार की प्रगति के नये-नये आयाम खुल गये जिनसे हम पूर्व में बिल्कुल ही अनभिज्ञ थे।

आध्यात्मिक जगत में भी कर्म का सिद्धांत एक अटल एवं संपूर्ण सत्य है कि हर कर्म की प्रतिक्रिया अवश्य होती है। इसका अर्थ यह हुआ कि यदि मैंने किसी को खुशी व सुख दिया है तो बदले में मुझे सुख व खुशी मिलेगी और यदि मैंने किसी को दुख दिया है तो बदले में मुझे भी दुख मिलेगा।

पहले दो, फिर लो का सिद्धांत
(Theory of give and take)

हम सब जीवन में खुशी चाहते हैं परंतु खुशी अपने आप नहीं मिलती, यह दूसरों को देने से मिलती है। हम दूसरों से सम्मान, प्रेम एवं सहयोग की अपेक्षा रखते हैं परंतु हमने स्वयं तो इनको दूसरों को दिया ही नहीं फिर हमें कहाँ से और क्यों मिलेंगे? हमने बीज बोया ही नहीं तो फसल कहाँ से मिलेगी? हमने बैंक में पैसा डाला ही नहीं तो निकाल कैसे सकेंगे? अत: प्राप्त करने के लिए पहले हमें देना होगा।

मनुष्यात्मा जन्म-मरण में आने के कारण दुख, सुख भोगती है परंतु परमात्मा अजन्मे हैं। इस कारण वे कर्म और फल से न्यारे हैं। वे सर्वबंधनों से स्वतंत्र हैं इसलिए कर्म सिद्धांत के ज्ञाता हैं और केवल वे ही हमें इसका सही स्पष्टीकरण देते हैं।

एक सच्ची घटना याद आ रही है। एक अमीर घराने

के लड़के की गाड़ी एक गड्ढे में फँस गई, बहुत कोशिश करने के बाद भी वह लड़का गाड़ी को गड्ढे से न निकाल सका। पास के मकान से एक साधारण-सा किसान यह सब देख रहा था। वह मकान से बाहर आया और गाड़ी को धक्का देकर बाहर निकाल दिया। लड़के ने उसका शुक्रिया अदा किया और चला गया। अगले दिन एक प्रौढ़ आयु का अमीर व्यक्ति किसान के घर आया और बोला, कल आपने जिस लड़के की गाड़ी को बाहर निकालने में मदद की थी, मैं उसका पिता हूँ, तुम्हें इनाम देना चाहता हूँ। किसान ने यह कहकर इनाम लेने से इंकार कर दिया कि मैंने तो मानवता के नाते केवल फर्ज़ निभाया है। बहुत आग्रह करने पर भी जब किसान इनाम लेने को तैयार न हुआ तो उस अमीर व्यक्ति ने पूछा, क्या आपका कोई पुत्र है? किसान ने उत्तर दिया, हाँ, मेरा एक बेटा है जो अभी स्कूल में पढ़ रहा है। अमीर ने निवेदन किया, आप अपना पुत्र मुझे दे दें, मैं उसकी उच्च शिक्षा और पालन-पोषण की पूरी ज़िम्मेदारी ले लूँगा। काफी सोच-विचार के पश्चात् किसान ने स्वीकृति दे दी। आगंतुक लड़के को लेकर चला गया।

अमीर व्यक्ति ने किसान के बेटे को अपने पुत्र की तरह पाला, उच्च शिक्षा दिलाई, फलस्वरूप वह एक बड़ा डॉक्टर बन गया। एक बार अमीर आदमी का अपना बेटा इतना सख्त बीमार हो गया कि उसके बचने की भी कोई उम्मीद नहीं रही। इसी बीच डॉक्टर बन चुके किसान के बेटे ने जीवन बचाने की दवा पैन्सिलिन (Life saving drug) का आविष्कार किया था। उसने उस दवा से अमीर के बेटे को स्वस्थ कर दिया।

क्या आप जानते हैं कि ये दोनों व्यक्ति कौन थे? किसान का पुत्र डॉक्टर फ्लेमिंग था जिसने जीवन बचाने

वाली दवा (Penicillin life saving drug) का आविष्कार किया था और अमीर आदमी का बेटा (जिसकी गाड़ी को किसान ने गड्ढे से बाहर निकाला था) सर विंस्टन चर्चिल था जो इंग्लैंड का प्रधानमंत्री बना। यह एक ज्वलंत उदाहरण है कर्मों की गुह्य गति का। किसान के बेटे को डॉक्टर बनाने का इनाम उसे इतना बड़ा मिला कि उसके अपने बेटे की जान बच गई। इसीलिए कहा गया है, कर भला तो हो भला।

एक बार पैगम्बर मोहम्मद साहब ने अपनी बेटी फातिमा को शिक्षा दी, ऐ मेरी प्यारी बेटी, यह न समझना कि तुम मोहम्मद साहब की बेटी हो इसलिए तुम्हारे सब गुनाह माफ हैं। अपने ऐमाल (कर्मों) का फल खुदा तुम्हें अवश्य देगा।

कर्म-सिद्धांत और तकदीर

कर्म सिद्धांत को पूरा समझना और अमल करना ज़रूरी है। तभी सहनशीलता के साथ कर्मठता आती है। केवल यह सोच लेना कि वर्तमान में मेरे साथ जो हो रहा है, वह मेरे पूर्व कर्मों का फल है, मेरी किस्मत ही ऐसी है, इसलिए मैं कुछ नहीं कर सकता हूँ, गलत है। कर्म-सिद्धांत को समझने के बाद हमारे अंदर सहनशक्ति आ जाती है। कर्म-सिद्धांत हमें यह भी सिखाता है कि अब यदि हम श्रेष्ठ और पवित्र कर्म करेंगे तो हम भविष्य का जीवन अपनी इच्छानुसार बना सकते हैं। हम केवल किस्मत के गुलाम नहीं हैं बल्कि श्रेष्ठ कर्म करके अपनी तकदीर के मालिक बन सकते हैं। इतना ही नहीं, हम अपने श्रेष्ठ उदाहरण द्वारा दूसरे मनुष्यों को प्रेरित भी कर सकते हैं।

बदले की भावना

आजकल दुनिया में अधिकांश लड़ाई-झगड़े एवं पारस्परिक मन-मुटाव, बदले की भावना तथा ईर्ष्या के कारण होते हैं। बदले की भावना के कारण परिवार के परिवार नष्ट हो जाते हैं। सामाजिक, राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय झगड़ों के पीछे भी अधिकतर बदले की भावना होती है। इस विकार के कारण आपसी वैर इतना बढ़ जाता है कि यह पीढ़ियों तक चलता है। इससे बचने का उपाय है, अपने को बदलें। अपने को बदलने से शत्रुता मिटती है।

दुखों का मूल कारण

कई लोग हम (ब्रह्माकुमार बहन-भाइयों से) पूछते हैं कि आपने अपने जीवन में तो किसी को कष्ट पहुँचाया नहीं और आप तो बहुत वर्षों से ज्ञान-योग के मार्ग पर चल रहे हैं, दूसरों को सुख, शान्ति व खुशी प्राप्त करने का रास्ता दिखा रहे हैं, आप स्वयं भी व्यसनों से बचे हुए हैं, दूसरों का भी इन व्यसनों से मुक्त होने का मार्गदर्शन कर रहे हैं तो फिर आपको हृदय रोग, कैन्सर, लीवर, किडनी आदि के व अन्य रोग क्यों हो रहे हैं? वास्तव में कर्म के सिद्धांत के अनुसार हमें अपने पिछले कर्मों का हिसाब-किताब चुक्ता करना ही है। जो बीज हमने बोये हुए हैं, उनका फल हमें ही खाना है।

विकर्म से कैसे मुक्ति पायें?

केवल कर्म के सिद्धांत को समझना ही काफी नहीं है लेकिन यह भी समझना बहुत आवश्यक है कि विकर्मों से कैसे मुक्ति पायें तथा श्रेष्ठ कर्मों का खाता कैसे बढ़ायें। इसके लिए हमें कुछ महत्वपूर्ण बातों को समझना होगा।

पहला, हम अब कोई नकारात्मक कर्म न करें। जो कर्म काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, ईर्ष्या, बदले की भावना आदि के वश किये जाते हैं, वे विकर्म बनते हैं। दूसरा, हम अपने पूर्व जन्मों में किये हुए पाप-कर्मों को समाप्त करें। इसके लिए हम राजयोग (अपने को आत्मा समझकर सर्वशक्तिवान परमात्मा की स्मृति में रहना) का अभ्यास करें ताकि योग-अग्नि में हमारे पाप भस्म हो सकें।

तीसरा, भविष्य के लिए हम अपने श्रेष्ठ कर्मों का खाता जमा करें। इसके लिए हम त्याग, तपस्या, सेवा तथा दिव्य-गुणों की धारणा द्वारा अन्य आत्माओं को सुख, शान्ति दें ताकि यह श्रेष्ठ व पवित्र कर्मों की पूंजी हम अपने साथ ले जायें। ❖

प्रभु ने हाथ थाम लिया

● ब्रह्माकुमार अवतार, दिल्ली (पहाड़गंज)

बात सन् 2009 की है, जीवन की नैया किसी तरह चल तो रही थी पर कोई लक्ष्य नहीं था कि आखिर जाना कहाँ है। जीवन में कारण-अकारण ही दुख-अशान्ति थी, दिनचर्या भी ऐसी हो गई कि सुबह 7 बजे उठना और स्नान आदि करके नाश्ते के बाद फिर सो जाना, 3 घंटे बाद उठकर 11 बजे ऑफिस जाना। इन परिस्थितियों को देखकर एक दिन लौकिक पिता ने कहा, क्या यही तुम्हारा लक्ष्य है, यह उम्र तो पढ़ाई की है और तुम सो रहे हो।

जीवन को नष्ट करने के विचार आने लगे

पिताजी की बात सुनकर मन में जीने की भावना खत्म होने लगी। एक तरफ जीवन को नष्ट करने का विचार आने लगा और दूसरी तरफ बार-बार मन में यह प्रश्न उठने लगा कि तुम्हें यह जीवन आखिर क्यों मिला है? तुम संसार में आये क्यों हो? यही सब जानने के लिए मन में भगवान के प्रति अति श्रद्धा भी जाग गई। सर्वप्रथम तो सच्ची शान्ति के लिए भगवान को पत्र लिखा और फिर मंदिर जाना प्रारंभ कर दिया। दिन-रात श्रीमद्भगवद् गीता का पाठ और ध्यान करने लगा। मंदिरों में जाकर गुरुओं से आशीर्वाद लेना, यह रोज़ की दिनचर्या हो गई थी परंतु मन फिर भी असंतुष्ट था।

आओ बच्चे, बाँहों में समा जाओ

एक रात को सोते समय मैंने भगवान से कहा कि हे भगवान, मुझे गीता ज्ञान कुछ समझ में नहीं आ रहा है, मेरी तो शान्ति और ही भंग हो गई है, कृपया आप स्वयं ही आ जाओ, यह कहकर मैं सो गया। रात के लगभग डेढ़ बजे मैंने स्वप्न में देखा कि सफेद कपड़े पहने कोई बुजुर्ग बाँहें फैलाए खड़ा है मानो कह रहा है, आ जाओ बच्चे, बाँहों में समा जाओ। फिर उस बुजुर्ग ने मेरा हाथ थामा और कहा कि तुम्हें गीता-ज्ञान चाहिए ना! तो चलो, तुम्हें गीता-ज्ञान और सच्ची मन की शान्ति देता हूँ। यह सुनकर मेरे रोमांच खड़े हो गये पर तभी मेरी आँखें खुल गई। अगले दिन दिनचर्या अनुसार मंदिर गया, वापसी पर देखा, मंदिर से कुछ दूरी पर एक प्रदर्शनी लगी थी। मेरी नज़र एक चित्र पर पड़ी जिसमें ब्रह्मा, विष्णु, महेश (त्रिमूर्ति) के चित्र थे। ब्रह्मा बाबा के चित्र पर मेरी दृष्टि टिक गई और मैंने ब्रह्माकुमार भाई से कहा कि मुझे सेन्टर पर ले चलो। वो मुझे सेन्टर पर ले गये और मैंने सात दिन का कोर्स किया। मुझे पहले दिन ही पता चल गया कि स्वप्न में जो बुजुर्ग मेरा हाथ थाम रहे थे, वे स्वयं ब्रह्मा बाबा थे। मैं कितना भाग्यवान हूँ जो स्वयं भगवान ने मेरे घर आकर मेरा हाथ थाम लिया। वाह बाबा वाह! सात दिन के कोर्स में यह पता चल गया कि वास्तव में हमारे जीवन का उद्देश्य क्या है।

पहले सोने से टोकते थे, अब जागने से

अब तो जब अमृतवेले उठता हूँ तो लौकिक पिता कभी-कभी कह देते हैं कि अभी तो तुम्हारी उम्र सोने की है, तुम चार बजे क्यों उठ जाते हो, अभी इतनी-सी उम्र में भगवान को याद करने से क्या फायदा, बाद में आराम से कर लेना। पर मुझे याद रहता है, भगवान ने कहा है, तुम्हारा एक-एक सेकंड बहुत कीमती है, विनाश सामने खड़ा है। मेरा सभी भाई-बहनों से यही निवेदन है कि यदि अपने जीवन के लक्ष्य को जानना हो, सच्ची मन की शान्ति पानी हो तो नज़दीकी ब्रह्माकुमारी आश्रम पर जाकर जीवन को सफल बना लो। ❖

परमात्मा संपूर्ण और कल्याणकारी हैं अतः वे क्षमाशील भी हैं। घोर धर्मग्लानि के समय मानव मात्र के कल्याणार्थ अवतरित होते हैं अर्थात् जब मनुष्य परमात्मा से पूर्णतया विपरीत बुद्धि बन जाते हैं तब उस क्षमा के सागर का मन करुणा से भर जाता है। वे मनुष्यों को दण्ड देने के लिए नहीं अपितु उन्हें सतोप्रधान बनाकर सद्गति प्रदान करने के लिए ही अवतरित होते हैं। अतः हमें भी वैसे ही क्षमाशील और करुणामय बनना चाहिए।

स्वस्थिति श्रेष्ठ तो परिस्थिति समाप्त

● ब्रह्माकुमार सूर्य, आबू पर्वत

कर्मसिंह ने अपने मन को नकारात्मक ऊर्जा से सम्पूर्णतया भर लिया था। डेढ़ वर्ष से वह अकल्पनीय समस्याओं से घिरता जा रहा था। परिवार वाले उसके विरोधी बन गये थे, कर्मक्षेत्र पर कर्मसिंह, सिंह न रहकर दुविधाओं का शिकार बन गया था। उसने फोन किया। हमने उन्हें दो दिन तक दो स्वमानों (मैं एक महान आत्मा हूँ और मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ) का अभ्यास 108 बार प्रतिदिन करने की राय दी और दो दिन बाद फोन करने को कहा। दो दिन बाद उनका फोन आया, प्रसन्नतापूर्वक यह कहते हुए कि मेरी सभी समस्याएँ समाप्त हो गयी हैं।

यह सुनकर मेरा चित्त भी अन्तर्मुखी हो गया। मन गहन चिन्तन में खो गया। मैं सोचने लगा कि यह कैसे हो गया कि लम्बी-चौड़ी समस्याएँ दो दिन में आध्यात्मिक शक्ति से समाप्त हो गई।

उत्तर मिल गया था। मन में अनेक वर्ष पूर्व के ईश्वरीय महावाक्य याद आने लगे कि समस्याएँ और कुछ नहीं बल्कि हमारे कमजोर मन की रचना हैं। हम जो कुछ सोचते हैं उसके प्रकम्पन पहले हमारे मस्तिष्क में प्रवेश करते हैं और फिर सारे ब्रह्माण्ड में फैल जाते हैं। ये तरंगें प्रकृति से मिलकर घटनाओं का निर्माण करती हैं। चूँकि सारे विश्व में, प्रकृति में इस समय तमोप्रधान प्रकम्पन हैं, इसलिए हमारे मन में उठने वाले व्यर्थ व नेगेटिव विचार ब्रह्माण्ड में फैलकर कई गुणा होकर वापस हमारे पास आ जाते हैं। यदि हम ब्रह्माण्ड में रोज श्रेष्ठ विचारों की तरंगें भेजें तो सारी समस्याएँ समाप्त हो जाएँगी। यही हुआ कर्मसिंह के साथ। उसने सारे दिन दो स्वमानों की तरंगें ब्रह्माण्ड में प्रेषित की तो समस्याओं का अन्त हो गया।

आप भी रोज़ सवेरे आँख खुलते ही सुन्दर विचारों की तरंगें ब्रह्माण्ड में फैलाएँ तो अनुभव चमत्कारी होंगे। हम

कुछ संकल्पों का वर्णन यहाँ कर रहे हैं -

सवेरे जल्दी उठकर कुछ क्षण योगयुक्त होकर आप इस तरह संकल्प करें कि मानो आप सारे ब्रह्माण्ड को सुना रहे हैं कि सुन लो -

मैं इस संसार में पदमापद्म भाग्यशाली हूँ...स्वयं भगवान मुझे मिल गए हैं...7 बार खुले मन से ये संकल्प करें...

- ✦ मैं बहुत सुखी हूँ...मुझे ईश्वरीय सुख प्राप्त हुआ है...
- ✦ मैं निर्भीक हूँ...मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ...मुझे सर्वशक्तिवान की शक्तियाँ मिली हैं...7 बार करें...
- ✦ मैं एक महान आत्मा हूँ...
- ✦ मेरा जीवन निर्विघ्न है...मैं विघ्नविनाशक हूँ...भगवान ने मेरे सभी विघ्न हर लिये हैं...
- ✦ मैं तनाव-मुक्त हूँ, मेरा चित्त शान्त हो गया है...
- ✦ मैं सन्तुष्टमणि हूँ...भगवान को पाकर मैं सन्तुष्ट हुई...
- ✦ मैं इष्ट देव/देवी हूं, साक्षात्कारमूर्त हूँ...सारा विश्व मेरे

इस स्वरूप को देख ले...।

ये 8 संकल्प हमने लिखे हैं। आप प्रतिदिन सारे करें या 3-4 करें। इससे अमृतवेला भी श्रेष्ठ होगा और 21 दिन लगातार करने से ही उसी तरह की अनुभूति होने लगेगी। याद रखें, यह कभी न सोचें कि मैं बहुत दुखी हूँ, मैं बहुत परेशान हूँ, मेरा मन बहुत भटकता है, मेरा तो योग ही नहीं लगता बल्कि ये संकल्प करें कि मैं श्रेष्ठ योगी हूँ...स्थिरचित्त हूँ...बहुत सुखी हूँ...बहुत धनवान हूँ...कर्जमुक्त हूं...आदि आदि। ऐसा करने से स्थिति श्रेष्ठ बनेगी व अनेक परिस्थितियाँ समाप्त हो जाएँगी। भगवानुवाच है - श्रेष्ठ स्थिति के सामने परिस्थितियाँ कुछ भी नहीं। और श्रेष्ठ स्थिति का आधार है स्वमान...।

हम सारे संसार में भी देख सकते हैं क्योंकि सभी मनुष्यों की स्वस्थिति बिगड़ी हुई है इसलिए संसार में परेशानियाँ व परिस्थितियाँ बिगड़ती जा रही हैं। मनुष्य का मन भी इतना निर्बल हो गया है कि उसे छोटी-छोटी बातें परेशान करती हैं। सम्बन्धों में ज़हर घुलता जा रहा है इसलिए सबकी सुख व शान्ति दूर होती जा रही है।

व्यक्तिगत रूप में भी देख सकते हैं कि मन की स्थिति यदि बिगड़ी हुई है, मन यदि तनावग्रस्त है तो उस मनुष्य को चारों ओर समस्याएँ ही समस्याएँ नज़र आयेंगी। उसे यह संसार काँटों का जंगल प्रतीत होगा। परन्तु यदि मन प्रसन्न हो तो उसे अपना जीवन व यह संसार सुखमय प्रतीत होगा। खेल सारा स्वस्थिति का है। किसी कर्म से पूर्व यदि स्वस्थिति श्रेष्ठ हो तो कर्म पर उसका सकारात्मक प्रभाव दिखाई देगा। इसी की यादगार में भक्ति में शुभ-कर्मों से पूर्व स्वास्तिक आदि बनाने की प्रथा है।

आप परिस्थितियों से घबरायें नहीं। परिस्थितियाँ या तो अपवित्रता से उत्पन्न होती हैं या पूर्व जन्मों के विकर्मों से या व्यर्थ संकल्पों से, क्रोध या सहनशक्ति की कमी से। याद रखें, जो कुछ हमारे साथ हो रहा है, उसके जिम्मेदार हम स्वयं हैं। हमने ही खुशी से बीज बोया है तो फसल को भी खुशी से ही स्वीकार करें।

मैं सभी परिस्थितियों से अधिक शक्तिशाली हूँ, इस स्मृति को दृढ़ करते चलें। इससे आपका फोर्स बढ़ता जाएगा व समस्याएँ ढ़ीली पड़ती जाएँगी। समस्याएँ हैं तो उनका समाधान भी है, समाधान पर विचार करेंगे तो मार्ग निकल ही जाएगा। यह स्मृति व नशा पक्का कर दें कि स्वयं भगवान मेरे साथ है तो भी अत्यधिक मदद महसूस होगी।

कइयों को तो परिस्थितियों ने मानो मार ही दिया है। उन्हें लगता है कि भाग्य उनका साथ ही नहीं दे रहा है, सब अपने, पराये हो गये हैं, सब खेल बिगड़ गया है परन्तु आप अपने मनोबल को खत्म न होने दें। जीवन के युद्ध में उतरे हैं तो युद्ध करते ही चलें। जहाँ जीत का विश्वास है और भगवान का साथ है, वहाँ विजय हो ही जाएगी। धैर्यतापूर्वक चलें। पूर्व का खाता क्लीयर होता जा रहा है, यह जानते हुए चित्त को शान्त रखें। चित्त शान्त होगा तो समस्याएँ भी शान्त हो जायेंगी।

कई लोग यह भी सोचते हैं कि हम सबकुछ शिव बाबा को समर्पित भी करते हैं, उनसे अच्छा योग भी लगाते हैं फिर भी समस्याओं का समाधान नहीं होता। यह रहस्य याद रखें कि बाबा तो अपने हर बच्चे को मदद करता ही है, उसे हमारे हिसाब-किताब भी चुक्तू कराने हैं व मदद भी करनी है परन्तु मन की उलझनों के कारण हम उसकी मदद को कैच नहीं कर पाते। बाबा सकाश भी देते हैं परन्तु कई आत्माएँ उसे ले नहीं पातीं। इसलिए इसमें बाबा से असन्तुष्ट होने की या संशय उठाने की बात नहीं है बल्कि पुण्यों का खाता व योगबल बढ़ाने पर ध्यान देना चाहिए।

हम यहाँ दो सुन्दर सत्य घटनाओं की चर्चा कर रहे हैं -

एक हाई स्कूल टीचर माता, डिप्रेशन की बहुत शिकार थी। उसे नींद भी नहीं आती थी। रात को 3 गोली खाकर सोती थी। अब उसे चक्कर आने लगे थे। वह कहीं

भी गिर जाती थी। स्कूल में, क्लास में जाते ही सबकुछ भूल जाती थी। यह माता हमारे पास आई। इसे ग्यारह वर्ष से डिप्रेशन था। हमने इससे अनेक प्रश्न पूछे ताकि इसके अवसाद का असली कारण समझ में आ सके।

इसको दो लड़कियाँ व एक लड़का ग्यारह वर्ष का था। बातों ही बातों में उसने बताया कि जब मैं अपने लड़के को देखती हूँ तो संकल्प आता है कि इसका गला घोंटकर इसे मार डालूँ और इसके बाद मेरा हाल बेहाल हो जाता है। मेरी समझ में समस्या का बीज आ गया था।

हमने उसे बताया कि पूर्व जन्म में आप दोनों की लड़ाई हुई। उसने आपको गला घोंटकर मार दिया था। आपने भी वही कोशिश की थी, परन्तु आप सफल नहीं हुए, वह अपूर्ण इच्छा अब आपके मन में प्रकट होती है। देखिये कर्म की गुह्य गति, आपका शत्रु अब आपका पुत्र है। न आप उसे मार सकती, न प्यार दे सकती। बस यही कारण है आपके डिप्रेशन का।

उसने पूछा, तो अब क्या करें? दवाइयाँ काम नहीं कर रही हैं। स्पष्ट है, दवाई यहाँ बेअसर रहेगी। हमने उसे दो विधियाँ बताई। सवेरे उठकर स्वयं को स्वमान में स्थित करके सच्चे मन से इस आत्मा को क्षमादान देना। सोचना है कि मैं महान आत्मा तुम्हें क्षमा करती हूँ। दूसरा - सोने से पूर्व 108 बार लिखना कि मैं एक महान आत्मा हूँ, दवाई छोड़ देना। ये दोनों अभ्यास 21 दिन तक करना। उसने प्रारम्भ किया और आश्चर्यजनक रूप से केवल ग्यारह दिन में उसका सब कुछ ठीक हो गया।

दूसरी घटना जोधपुर के एक डाक्टर की है। यह व्यक्ति गम्भीर रूप से बीमार हो गया। अनेक उपचार करने के बाद भी सुधार नहीं हुआ और स्थिति मृत्यु की ओर बढ़ने लगी। इनके सम्बन्धी हाईकोर्ट के वकील ने, जो कि ब्रह्माकुमार हैं, अपनी दीदी से इसका उपाय पूछा। वह बहन सेमी ट्रान्स के वरदान को प्राप्त है। उसने बताया कि ये डॉक्टर पूर्व जन्म में राजकुमार था। अपने बगीचे में बैठा था। वहाँ कोई ब्राह्मण आया। दोनों की बातों ने वाद-विवाद का रूप धारण कर लिया और क्रोधित होकर इसने उस ब्राह्मण को तलवार से मार डाला था। उसका श्राप अब इसे जीने नहीं देगा। तो क्या करें? बहन ने बताया कि डॉक्टर मन ही मन ब्राह्मण आत्मा से क्षमा याचना करे। डॉक्टर ने स्वीकार किया और क्षमा याचना करना प्रारम्भ किया। परिणामत: कुछ ही दिनों में डॉक्टर स्वस्थ होकर घर लौट आया।

मनुष्य जब पाप करता है तो वह उसे महसूस नहीं करता, परन्तु जब पाप का फल सामने आता है तो वह व्यथित हो उठता है। इसलिए अब हमें पुण्य का खाता बढ़ाना चाहिए। मेरे पास ऐसे अनेकों उदाहरण हैं जिनमें स्थिति ठीक करने से परिस्थितियाँ जल्दी ही बदल गईं। इसलिए परिस्थितियों से परेशान न होकर उस समय विशेष योग करें ताकि वे विकर्म नष्ट हो जाएँ जिनके कारण समस्याएँ आ रही हैं।

अन्त में मैं एक रहस्यमयी बात कहना चाहता हूँ। आप चेक करें कि आपने अपना आन्तरिक संसार कैसा बनाया है। प्रत्येक मनुष्य स्वयं ही अपने भाग्य का निर्माता है। आपके आन्तरिक संसार में अर्थात् मन के संसार में क्या-क्या भरा है? ज़हर या अमृत, नकारात्मकता या सकारात्मकता, पवित्रता या अपवित्रता, शुभ भावनाएँ या बदले की भावना, निर्मलता या जटिलता, व्यर्थ या समर्थ, सत्यता या असत्यता? अपना आन्तरिक संसार बदल दो तो बाह्य संसार स्वत: ही बदल जाएगा।

तो आइये, हम अपनी शक्तियों को पहचान कर उनका उपयोग करें। अपनी महानताओं को पहचान कर उनमें स्थित हो जाएँ। रोज़ याद करें कि कौन हमें साथ दे रहा है, प्रतिदिन स्वयं को ईश्वरीय शक्तियों व वरदानों से भरें, मन को खुशी से भरें, बुद्धि को स्वच्छ करें तो यह जीवन, जीवनमुक्त बन जाएगा। ❖

किसान दिवस पर विशेष..

उत्तम खेती

● ब्रह्माकुमार बद्रीविशाल, लखनऊ

कृषि प्रधान देश भारत की 70 प्रतिशत आबादी कृषि पर आश्रित है। कहावत है कि 'इस देश में खुशहाली का रास्ता खेत, खलिहान एवं गाँवों से होकर गुजरता है।' रामचरित मानस में त्रेतायुगी सतोगुणी प्रकृति का वर्णन बड़ी खूबसूरती से करते हुये कहा गया है कि उस समय पेड़ पौधों में सदा ही फलफूल लगे रहते थे, 'फूलहिं फलहिं सदा तरू कानन, रहहिं एक संग गज पंचानन।' सभी सर्वांग सुन्दर निरोगी होते थे, 'सब सुन्दर सब निरूज शरीरा।' जब त्रेतायुग में इतनी श्रेष्ठ प्रकृति थी तो सतोप्रधान युग, सतयुग में कितनी श्रेष्ठ रही होगी इसकी कल्पना करना भी आज के मनुष्यों के लिये संभव नहीं है। हम यदि इन युगों की बातें छोड़ भी दें और वर्तमान उपलब्ध जानकारी के अनुसार निकट समय की बातें करें तो वर्ष 1880 के आसपास जब भारत की आबादी लगभग 20 करोड़ थी तो इसमें से 16 करोड़ लोग खेती करते थे। खेती लाभप्रद थी, लागत कम थी, कम समय में अधिक आमदनी होती थी। खेती में एक दाना डालो सैकड़ों दाने तैयार होते। किसी उद्योग धन्धे में एक लगाने पर जितने समय में दो भी नहीं हो सकता उतने समय में खेती में हज़ारों गुना हो जाता। खेती में साल के 365 दिनों में 60 से 90 दिन काम करने पड़ते तो 275 से 300 दिन किसानों को खाली मिल जाते जिसमें वे कुटीर उद्योग चलाते। कोई चरखे से सूत कात कर कपड़े बनाता तो कोई चटाई, पंखे, झाड़ू, रस्सी या कोई अन्य उपयोगी चीज़ें बनाता। किसान सन्तुष्ट और खुशहाल था।

खेती के बुरे दिन

देश के खुशहाल किसानों पर अंग्रेज़ों की नज़र लगी और उन्होंने सबसे पहला आक्रमण यहाँ के किसानों तथा कुटीर उद्योग पर किया। मनमाने लगान की वसूली से तंग आकर किसानों ने अपने खेत छोड़ दिये, जिन पर ज़मींदारों का कब्ज़ा हो गया। कुटीर उद्योग में बनने वाली ढाका के मलमल की साड़ियाँ जो माचिस की डिब्बी के बराबर छोटी सी डिब्बी में पैक होकर विदेशों में जाती थीं, उसके बनाने वाले कारीगरों ने अंग्रेजों के सितम से तंग आकर अपने हाथों के अंगूठे काट डाले। अंग्रेज़ों द्वारा जबरन नील की खेती कराये जाने से ज़मीन बंजर होने लगी। खेती और किसानों की इतनी बुरी दशा हो गयी कि भारत आज़ाद हुआ तो देश के सामने सबसे बड़ी समस्या भूखमरी की थी। देश में खाने के लिये अनाज नहीं, लोग भूखों मर रहे थे तभी लालबहादुर शास्त्री जी ने देश की जनता से सप्ताह में एक दिन व्रत रखने का आह्वान किया, हरित क्रान्ति का नारा दिया गया। देश के कृषि वैज्ञानिकों तथा किसानों ने मिलकर कृषि उत्पादन तथा उत्पादकता में अभूतपूर्व वृद्धि की और खाद्यान्न उत्पादन जनसंख्या के तीव्रगति से बढ़ने के बावजूद भी आवश्यकता से बहुत अधिक होने लगा।

सरकार चिन्तित

पिछले दशक से यह देखने में आ रहा है कि कृषि की उत्पादन लागत बढ़ती जा रही है तथा किसान को उसकी लागत के अनुरूप मूल्य नहीं मिल रहा है, उत्पादन में ठहराव आ रहा है, रासायनिक उर्वरकों की मात्रा में कई गुना वृद्धि के उपरान्त भी उत्पादन में तुलनात्मक वृद्धि नहीं हो पा रही है, मिट्टी की उर्वराशक्ति समाप्त होती जा रही है। कृषि रक्षा रसायन, कीड़े और बीमारियों पर प्रभावहीन हो रहे हैं, उल्टे पर्यावरण को नष्ट कर रहे हैं। आन्ध्र प्रदेश, महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश के बुन्देलखण्ड तथा देश के अन्य भागों में किसानों द्वारा आत्महत्याएं किये जाने की घटनाओं ने सरकार को हिला कर रख दिया है। भारत सरकार ने किसानों की समस्याओं को समझने तथा उनके निराकरण के लिये 'किसान आयोग' का गठन किया। 'राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मिशन'

तथा 'राष्ट्रीय कृषि विकास योजना' को पूरे देश में लागू कर उत्पादन एवं उत्पादकता वृद्धि में आ रहे अवरोधों को दूर करने का भरपूर प्रयास कर रही है। दूसरे शब्दों में, आज़ादी के बाद एक बार पुन: दूसरी हरित क्रान्ति लाने का प्रयास किया जा रहा है।

आधारभूत कमी

भारत सरकार तथा प्रदेश सरकारें किसानों की लागत कम करने के लिये लगातार बीज, यंत्र, कृषि रक्षा रसायन आदि पर अनुदान बढ़ा रही हैं। रसायनिक उर्वरकों के स्थान पर जैव उर्वरक, हरी खाद आदि को बढ़ावा दे रही हैं। हानिकारक कृषि रक्षा रसायनों के स्थान पर प्राकृतिक तरीके से नीम के तेल, तम्बाकू, गोमूत्र आदि से बने रसायनों को बढ़ावा दे रही हैं। प्राचीनकाल में इन्हीं चीजों का उपयोग खेती में किया जाता था। सरकारें फसल बीमा के साथ जोखिम को कम करने के लिये पुराने समय में की जाने वाली मिलवा खेती को बढ़ावा दे रही हैं। लेकिन एक बात पर किसी का ध्यान अभी तक नहीं जा रहा है कि प्राचीनकाल में लोग खेती का कार्य करते हुये खेत, बीज तथा फसलों को पवित्र सकारात्मक तरंगें भी देते थे। बैलों के गले में बन्धे हुये घुंघरू से मधुर संगीत की तरंगें, बीज बोने से पहले धरती पर कलश रखकर भगवान का ध्यान करते हुये बीज की बुआई आरम्भ कर पवित्र मान्सिक तरंगों का प्रयोग, फसल की बुआई और निकाई के समय महिलाओं द्वारा धार्मिक तथा खुशी की तरंगें फैलाने वाले लोकगीतों का गायन, फसल तैयार होने के पश्चात पुन: उत्सव मनाना, गरीबों और ज़रूरतमन्दों को दान करके तथा अपने इष्ट को भोग लगाकर अनाज का उपयोग करना। यह सब खेती के साथ मानवीय संवेदना को जोड़ने का जो कार्य था वह अब नहीं हो पा रहा है।

आशा की एक किरण

ईश्वरीय विश्व विद्यालय से जुड़े हुये अनेक भाई-बहनें परमपिता परमात्मा शिव द्वारा प्रेरित ''शाश्वत यौगिक खेती'' कर रहे हैं। यौगिक खेती के अन्तर्गत बीज बोने से पहले उसे ध्यान कक्ष में रखकर पवित्र एवं शक्तिशाली योग तरंगों से पोषित करते, परमात्मा की याद में फसल बोते, जैविक खाद, जीवामृत, प्राकृतिक कृषि रक्षा प्रबन्धन अपनाते तथा खेत में शिव ध्वज फहराकर प्रतिदिन कुछ मिनट पवित्र मान्सिक तरंगें फसल को देते रहते जिससे उन्हें बहुत ही कम लागत में शुद्ध, पौष्टिक तथा शक्तिशाली अनाज एवं सब्जियां प्राप्त होतीं। जैसा अन्न वैसा मन अर्थात् विचार शक्ति होती, जैसा विचार वैसा व्यक्तित्व, परिवार और समाज बनता। इस प्रकार शुद्ध सात्विक अन्न पवित्र, निरोगी, सुखमय समाज का निर्माण करता है।

खेती ही सर्वोत्तम

''कृषि मूलश्च जीवनम्'' के सूत्र के अनुसार खेती ही जीवन का आधार है। खेती ही सर्वोत्तम है क्योंकि खेती में बेईमानी की कोई गुन्जाइश नहीं जब कि अन्य व्यापार एवं पेशे में बेईमानी की संभावना बनी रहती है। हिन्दी के प्रथम अक्षर 'क' से कृषि तथा अंग्रेजी के प्रथम अल्फाबेट A से Agriculture शब्द बने हैं। सभ्यता के विकास में कृषि का प्रथम स्थान रहा है तो परमात्मा की प्रेरणा से कृषि प्रधान देश भारत, पुन: शाश्वत यौगिक खेती अपना कर नये सतोप्रधान विश्व के निर्माण में भी अग्रणी भूमिका निभाने वाला है। ईश्वरीय विश्व विद्यालय से जुड़े हुये भाई बहनें जो खेती कर रहे हैं उन्हें चाहिये कि वे शाश्वत यौगिक तथा जैविक खेती को अधिकाधिक अपनाते हुये अपने-अपने जनपद के जिला कृषि अधिकारी तथा राज्य स्तर पर कृषि निदेशक एवं कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों को अध्ययन के लिये सूचित करें, मीडिया के लोगों को भी आमन्त्रित करें। वर्तमान में जो किसान खेती को मजबूरी में अपनाया जाने वाला करोबार समझते हैं, वे इस पुरानी कहावत को दोहराने लगें कि ''उत्तम खेती, मध्यम बान। निषिद्ध चाकरी, भीख निदान।'' ❖

बाबा ने बनाया विजयी

● डॉ. आर.पी. भारद्वाज, पंचकूला

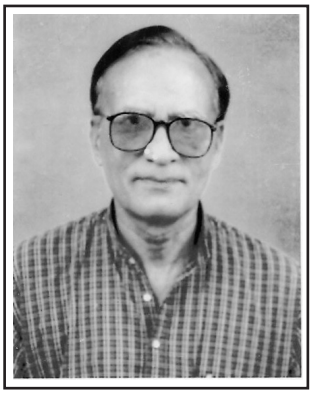

बात नवंबर 27, 2010, दोपहर 12 बजे की है, मैं अपने ड्राइंग रूम में काम में व्यस्त था। तभी मेरे दो बहुत मीठे-प्यारे मित्र, अब्बी भाई और गोयल भाई आये और बोले, पंचकूला के ताऊ देवीलाल स्टेडियम में हरियाणा राज्य स्तर की एथलेटिक्स हो रही है, चलो देखने चलते हैं। गोयल जी उसमें प्रतिभागी बनने के लिए 100 रुपये की एंट्री फीस जमा करवाकर आये थे। मेरे बार-बार मना करने पर भी वे जिद्द पर अड़े रहे कि चलो इवेन्ट्स को देखना ही है। आखिर हम तीनों स्टेडियम में पहुँच गये और वहाँ 100 रुपये की एंट्री फीस भर दी और तीन इवेन्ट्स 400 मीटर दौड़, डिस्कस थ्रो और जैवलिन थ्रो चुनी गई और इन तीनों में मुझे एक गोल्ड, एक सिल्वर और एक ब्रोंज मैडल मिला और हरियाणा राज्य ने मेरा नाम नेशनल के लिए भेज दिया।

वर्ष 2011 की 32वीं मास्टर्स नेशनल चैम्पियनशिप, चंडीगढ़ में 24 फरवरी से 27 फरवरी को होनी थी। मुझे 25 जनवरी, 2011 को पता चला कि मेरा नाम नेशनल के लिए भेजा गया है इसलिए 6 फरवरी, 2011 से प्रैक्टिस के लिए शाम 4 बजे स्टेडियम में जाना शुरू किया परंतु 8 फरवरी को प्रैक्टिस के दौरान मेरा घुटना डिस्लोकेट हो गया। घुटने को दबा कर सेट तो कर लिया लेकिन सूजन और दर्द बहुत बढ़ गया। जो दवाई हफ्ते में दो बार खानी होती है, होम्योपैथी डॉक्टर होने के नाते मैं उसे 2-2 घंटे बाद लेता रहा और अगले दिन क्रैप बैंडेज बांध कर प्रैक्टिस पर चला गया। निर्धारित तिथि 24 फरवरी, 2011 को नैशनल एथलेटिक्स चैम्पियनशिप का उद्घाटन हो गया और डिस्कस थ्रो और जैवलिन थ्रो में कोई पोजीशन नहीं आई। मैंने सोचा, चलो प्रतिभागी होने का नेशनल का सर्टीफिकेट तो मिलेगा, यही काफी है।

क्लोजिंग थी 27 फरवरी, 2011 को और गोयल जी ने 4×400 मीटर रिले दौड़ में हिस्सा लेना था तो हम चंडीगढ़ में सात सैक्टर स्टेडियम में पहुँच गए और उनका हौसला बढ़ाने के लिए बाहर खड़े रहे। तभी एक 70+ की उम्र का व्यक्ति मेरे पास आया और बोला, डॉक्टर साहब, आप 70+ की उम्र के ग्रुप के हो, आप हमारी टीम में 4×400 मीटर रिले दौड़ में दौड़ो क्योंकि हमारा एक साथी नहीं पहुँचा। मैंने मना कर दिया तो उन्होंने कहा कि ऐसा न करो, नहीं तो हमारी टीम कैंसिल हो जायेगी। मैं मान गया। मेरे पास बाकी प्रतिभागियों की तरह दौड़ वाली शॉर्ट किट तो थी नहीं, मैंने अपनी ट्राउजर वाली किट से ही दौड़ शुरू कर दी। अभी आधी दौड़ ही की थी कि मेरी सांस फूल गई।

मैंने बाबा को याद किया और कहा, बाबा, अब मुझसे नहीं दौड़ा जाता, अब आप ही दौड़ो। मुझे महसूस हुआ कि उसी समय बाबा आये और मुझे गोद में उठाकर दौड़े। यह दौड़ पूरी स्पीड से पूरी हुई और मुझे 4×400 मीटर रिले दौड़ में नेशनल मास्टर्स एथलेटिक्स चेम्पियनशिप 2011 का गोल्ड मैडल मिल गया। अगले दिन सब अखबारों में खबरें छप गई। रूबरू चैनल ने मेरा लंबा-चौड़ा इंटरव्यू टीवी पर टेलीकास्ट किया। आश्चर्य है, बाबा ने कैसे अपने सिकीलधे बच्चे को विजयी बना दिया।

यादगार शास्त्रों में दिखाते हैं कि बाबा ने कैसे गरीब सुदामा को महल माड़ियों का मालिक बनाया, अर्जुन

(शेष..पृष्ठ 25 पर)

कोहिनूर बनना चाहती हो या बेनूर

● ब्रह्माकुमारी सुमन, लखनऊ (अलीगंज)

कलियुग के अंत में हर बुराई अपनी चरम सीमा को पार कर रही है, कहीं दहेज का दानव, कहीं अहम् की आग, कहीं अत्याचार का आतंक, कहीं अपहरण का तूफान, कहीं भेदभाव की दीवार, कहीं रूप-रंग का दावानल – ये सब नित्य कितनों को लीलते हैं, कितनों को तिल-तिल कर मार रहे हैं! जिनसे सुरक्षा की आश लगाये बैठे हैं वही निगलने को तैयार बैठे हैं। कहीं कोई बाप का शिकार, कहीं भाई की मार, कहीं पति की प्रताड़ना, कहीं परिवार की ज्यादतियाँ, कहीं पड़ोसियों का उत्पीड़न, कहीं बॉस की मनमानी, किसी का तो शिकार लड़की को बनना ही पड़ता है। न कोई सुकून की जगह, न कोई विश्वासपात्र जिसके साथ सदा के लिए सुरक्षित एवं चैन से रहा जा सके। कब किसके मन में भूत सवार हो जाये कुछ पता नहीं।

घर-घर में है भेदभाव की दीवार

इन बेबस, असहाय, गरीब, अनाथ बहनों पर अत्याचार, अन्याय इनका शोषण होते देख क्या तुम्हारे मन में कोई दया उत्पन्न नहीं होती? घर-घर में भेदभाव की दीवार को 21वीं सदी भी तोड़ नहीं पाई? जब अपनी लड़की के साथ भेदभाव है तो पराये घर से आई हुई लड़की के साथ कितना ईमानदारी से व्यवहार होगा? किसी को पैदा होने पर मार दिया जाता और किसी को पैदा होने से पहले ही। कहीं उबालकर खाने का समाचार है तो कहीं अंग काट-काटकर फ्रिज में रखने का समाचार है। अत्याचार, पापाचार और बेरहमी के इन समाचारों से क्या तुम्हारा दिल नहीं पसीजता?

दया की देवी माँ

कोई काम के नहीं हैं, कोई काम नहीं, दिन भर घूमना, शराब पीना, घर आकर पत्नी को मारना, हुक्म चलाना, तानाशाही झाड़ना, बच्चों की कोई खबर नहीं। बच्चों को पालना पत्नी का काम, पैदा करना पुरुष का काम। कुछ गलती की, पकड़े गये तो संन्यासी बन गये, घर की ज़िम्मेवारी से मुक्त, छह छोटे-छोटे बच्चे, कौन करेगा उनकी परवरिश? वही, जिसे 2500 साल से अबला कहते आये। जिसने कभी खेती देखी नहीं, धंधाधोरी जानती नहीं। बेचारी माँ, दया की देवी, वह तो बच्चों को छोड़कर नहीं जा सकती, वह किसी भी बच्चे का दुख नहीं देख सकती, उसे तो किसी न किसी रीति से पालना करनी ही है पर कैसे चला पायेगी मजबूरी की गाड़ी को?

सच्चाइयों से मुँह कब तक मोड़ती रहोगी

बहनो, क्या तुम्हारे मन में इनके प्रति कोई करुणा नहीं जाग्रत होती? ये सब तो अपने को बंधन व दायरे में बंधा हुआ महसूस कर रही हैं पर तुम तो निर्बन्धन हो, तुम्हें क्यों ख्याल नहीं आता कि ये जंग हमारी भी है। इनके अन्याय से हम लड़ेंगे। बहनो, अन्याय करना जितना बड़ा अपराध है, अन्याय सहन करना उससे भी बड़ा अपराध है, यह अन्याय को बढ़ावा देना है। तुम्हारे सामने किसी लाचार, बेबस पर अत्याचार होता रहे, तो क्या तुम चुपचाप देखती रहोगी? माँ-बहनों पर हो रहे अत्याचार को तुमसे ज्यादा कोई और नहीं समझ सकता इसलिए अब कोमलता व नाजुकता की काली सुरंग से बाहर निकलो, जाग्रत करो अपनी सुषुप्त शक्तियों को, उतार फेंको अबला के ठप्पे को और दिखा दो अपना असली रूप जिससे दहल उठे संसार, भयभीत हो जायें आतंकी, तुम कब तक सोती रहोगी और कब तक इन सच्चाइयों से मुँह मोड़कर भागती रहोगी? अगर तुम घूमकर खड़ी नहीं होंगी तो ये एक दिन तुम्हें भी अपनी चपेट में लेने वाली हैं। सुरसा के मुँह की तरह फैली ये विकृतियाँ किसी को छोड़ने वाली

नहीं, अगर इनको रोका नहीं गया तो पूरा ही हप कर जायेंगी, इसलिए बहनो, अब गफलत मत करो, जागो और जगाओ अपने स्वमान को, कहीं देर न हो जाये।

करिश्मा न सही, करने योग्य तो करो

संसार जल रहा है, मानवता चीख रही है, नैतिकता तड़प रही है, आध्यात्मिकता अंतिम सांसें ले रही है, समाज जल रहा है और तुम कहाँ फैशन में व्यस्त हो, कहाँ शोर-शराबे की पार्टियों में त्रस्त हो। फैशन की आँधी में क्यों अपनी असली सुंदरता को उड़ा दे रही हो? जबान के स्वाद में नित नई बीमारियों को बुला रही हो, देर रात तक चलने वाली पार्टियों में आधुनिकता का लिबास पहन, हो-हल्ला मचाते नित नये खतरों को तैयार कर रही हो। प्यारी बहनो, एक बार इस मायावी चम्बे से बाहर निकलकर तो देखो। करने को ज़िन्दगी में बहुत कुछ है, करिश्मा या कारनामा न भी करो पर करने योग्य कर्म तो अवश्य करो।

विजय तुम्हारी ही होगी

वक्त की पुकार, प्रकृति की चेतावनी, माया की चुनौती, भगवान का आह्वान तुम्हें सचेत कर रहा है कि रुकना ठीक नहीं, तुम्हें कुछ करना ही होगा। छोड़ो गलतफहमियाँ, मौज-मस्तियाँ, अब समय है अपनी शक्ति को सार्वजनिक करने का, अन्याय का सामना करने का, चेतावनी को चुनौती देने का, ध्वस्त कर दो हर बुराई के बीज को, बहादुरी व पराक्रम का मूल्यांकन कर्मक्षेत्र में ही होता है। चलो कूद पड़ो रणभूमि में, तुम्हें अपनी लड़ाई खुद लड़नी होगी, विजय भी तुम्हारी ही होगी, वह तुमसे बचकर कहीं नहीं जा सकती।

शक्ति अवतार हो तुम

कलियुग के अंत में जबकि चारों ओर पाप सिर पर चढ़कर बोल रहा है, ऐसे में कुमारी की पूजा, सौ ब्राह्मणों से उत्तम एक कुमारी को माना जाना, हर काम की शुरूआत पवित्र कन्या से करवाना – ये सब क्या सिद्ध कर रहे हैं? यही कि कन्या जीवन कितना शक्तिशाली, कितना कीमती है। परंतु हाय, तुम नहीं जानती कि तुम क्या हो? काश, हीरे को अपने मूल्य का पता होता! बहनो, अपनी अपार ऊर्जा को पहचानो, अपनी विशेषताओं का मूल्यांकन खुद करो, समझो अपनी योग्यताओं को, तुम साधारण नहीं हो, शक्ति का अवतार हो, ऊर्जा का रूप हो, तुम्हारे साथ स्वयं भगवान है, उसने बहनों पर विश्वास करके विश्व-परिवर्तन का कार्य दिया है। भगवान जानी जाननहार है, तुम यह काम कर सकती हो, तुममें वह शक्ति है, भगवान ने पहचान करके ही तुम्हारा आह्वान किया है।

सुन्दरता होती है मन की

सावधान रहो बहनो, तुम्हारा मन इस मायावी नगरी की चकाचौंध में चक्कर न खा जाये। तुम्हें सैकड़ों प्रलोभन देने आयेंगे। मुंबई जैसी मायानगरी का आकर्षण भी खींचेगा परंतु उसकी सच्चाई जान लो, पैसा व शोहरत अच्छी बात है परंतु चरित्र व सदाचार से बढ़कर कुछ नहीं, ऐसे पैसे व पद को लात मार मुँह मोड़ लेना चाहिए। शोहरत मिले न मिले पर सोहबत ठीक होनी चाहिए, धन हो या न हो पर चैन हो। मदर टेरेसा की पहचान विश्व के कोने-कोने में, बच्चे-बच्चे की जुबान पर है, उन्होंने किसी कपड़े व प्रदर्शन से यह नाम नहीं कमाया, करुणा और दया रूपी गुणों से सारे विश्व में ममता का डंका बजाया। गार्गी, पन्ना धाय, अपाला, दुर्गावती, लक्ष्मीबाई, जीजाबाई, मीरा ये भी तो नारियाँ ही थी। सैकड़ों वर्षों बाद आज भी इनकी छवि धूमिल नहीं हुई। फिल्मी कलाकारों का जमाना केवल दो-चार वर्षों का होता है, और फिर सभी लोग उनको किस नजरिये से देखते हैं! सोचो जरा, लक्ष्मी, सरस्वती, दुर्गा ये भी तो नारियाँ ही थीं, जिन्होंने अनेक गंदे मनों को स्वच्छ बना दिया, उनकी शालीनता देखिये, कोई कपड़ों के आधार पर उनकी सुंदरता नहीं मापी गई। हज़ारों साल बाद भी इनकी सुंदरता और इनका सम्मान कायम है। इनकी तरफ एक बार नज़र घुमाकर

तो देखो, तुम्हारा मन भी सुंदर हो जायेगा। सुंदरता तो मन की होती है अगर कोई बहुत सुंदर मुखाकृति वाला हो पर उसका व्यवहार अच्छा न हो तो उसके नजदीक कोई नहीं जाना चाहता। ऐसे सुंदर बनो, जो सुंदरता सदियों तलक चले।

धन की लालसा बनाती है दलदल

बहनो, दूसरा आकर्षण है धन का। इसकी चमक भी कम नहीं है। आकण्ठ धन में डूबने पर भी संतुष्टता नहीं और जहाँ संतोष नहीं वहाँ सुख कहाँ। धन कमाना कोई बुरी बात नहीं। धन के बिना जीवन ठीक तरीके से नहीं चल पाता परंतु धन की लालसा एक नया दलदल बनाती है जिससे निकलना नामुमकिन होता है। यहाँ किसी ने कितना भी धन कमाया हो, पर वह किसी अन्य को भी धन की प्राप्ति कराये, ऐसा नहीं होता है। पर धन की देवी लक्ष्मी के लिए तो सभी मानते हैं कि वह दूसरों को भी धनवान बनाती है। क्यों नहीं तुम भी ऐसी धनी बनो जो तुम्हें कभी कमी न पड़े बल्कि तुम दूसरों को भी सम्पन्न बना दो। इसलिए बहनो, भगवान के आह्वान को सहर्ष स्वीकार कर आ जाओ सेवा के मैदान में।

अनेकों के पाप धो सकती हो

कन्या सौ ब्राह्मणों से उत्तम कहलाती है लेकिन कौन-सी? वह कन्या है ब्रह्माकन्या जिसे भगवान बनाता है, जिसे ब्रह्माकुमारी कहते हैं। इसलिए बहनो चलो भगवान की मत पर, तुम अपना तो क्या सारे विश्व का उद्धार कर सकती हो, खुशी का निर्मल-निर्झर बन अनेकों को खुशी से सराबोर कर सकती हो। पावनता की बहती नदी बन, अनेकों के पाप धो सकती हो। प्रकाश का स्तंभ बन अनेकों का तिमिर हर जीवन को रोशन कर सकती हो। ऊर्जा का प्रतिबिम्ब बन अनेक बुझते दीपों को प्रकाश की किरणें दे सकती हो, शान्ति का अनन्त स्त्रोत बन हर मन को सच्ची शान्ति दे सकती हो। गुणों की गरिमा से संपन्न बन अनेकों के जीवन में जीवंत खुशबू भर सकती हो। करुणा और दया की प्रतिमूर्ति बन अनेकों को सद्मार्ग का रास्ता दे सकती हो। शीतल चांदनी समान बन अनेकों के तपते मन को राहत दे सकती हो। प्रेम का विमल सिन्धु बन अनेक तड़पते दिलों को स्नेहिल अनुभव दे सकती हो।

क्या तुम्हें ऐसा जीवन पसंद है या फिर पिंजरे की मैना बन, बंधन में जीना पसंद है? **किसी की गुलामी की जंजीरों में स्वयं को जकड़ने से तो उत्तम है स्वतंत्र हो अपनी ऊर्जा का सर्व के हित में सदुपयोग करना। बंधन में बंधोगी तो अपनी ही मुक्ति के लिए समाज या सरकार या भगवान से फरियाद करती रहोगी। भगवान तो फरियादों से छुड़ाने आया है, वह अपनी सारी शक्तियाँ देकर अपने जैसा सर्वशक्तिमान बनाकर विश्व नवनिर्माण के कार्य में सहयोगी बना फिर अधिकारी बनाने आया है। क्या उसकी यह पेशकश तुम्हें स्वीकार नहीं?** तुम्हारे सामने दोनों रास्ते हैं, फैसला तुम्हें करना है, तुम अपनी जिन्दगी को कोहिनूर बनाना चाहती हो या बेनूर? ❖

बाबा ने ..पृष्ठ 22 का शेष

को पाप-पुण्य की लड़ाई में विजय दिलवाई, मीरा का जहर का प्याला अमृत बना दिया, ऐसे सैकड़ों उदाहरण हैं कि बाबा कैसे मददगार बनकर पासा पलट देता है। बाबा की चुनाव प्रक्रिया चमत्कारी है और इस तरह चुन-चुनकर बाबा यदि सब अचानक करता रहा तो सतयुग के आने में कोई देर नहीं, वह आने ही वाला है, ऐसा मुझे अब पूर्ण विश्वास हो गया है। ❖

जिस प्रकार फूलों की महिमा उनकी खुशबू से होती है, उसी प्रकार मनुष्य की महिमा उसके गुणों से होती है

अबूझमाड से आबू तक

● डॉ. कृष्णा, बोकारो

मेरे निजी जीवन में, उम्र के 50वें साल में एक हादसा हुआ। मेरे दो बच्चों में से बेटी डॉक्टर बन चुकी थी और बेटा डॉक्टर बनने ही वाला था कि इसी बीच पति से संबंध-विच्छेद हो गया लेकिन कहते हैं कि विपत्तियों से घबराओ मत क्योंकि सूर्य गहन अंधकार के बाद ही उदय होता है। इस गहन अंधकार के बाद मेरे जीवन में भी एक नया सूर्य उदय हुआ और मैंने बस्तर जिले के अबूझमाड (Unknown Island) क्षेत्र के आदिवासियों के दुख-दर्द में अपने को शामिल कर लिया।

आदिवासी भी अनेक प्रकार के हैं लेकिन यह बिल्कुल ही आदिम जाति है जिन तक उस समय तक सभ्यता की किरण बिल्कुल नहीं पहुँची थी। यह जाति पाषाण युग में जी रही थी। नौजवान युवतियाँ भी शरीर पर नाममात्र ही कपड़े पहनती थीं। अनेक पीढ़ियों से उन्होंने कागज़-कलम देखा नहीं था। भोजन के नाम पर चींटों, कीड़ों को भूनकर खाते थे। प्रसव के दौरान अकेली महिला सब परेशानियों को भुगतते हुए बच्चे की नाल हंसिया या तीर से स्वयं ही काटती थी। सलफी नाम के पेड़ के रस को नशे के रूप में बहन-भाई उपयोग करते थे। उनके नशे की आड़ में अक्सर उनके शिशुओं को जंगली जानवर उठाकर ले जाते थे। शहरी लोग ऐसे भोले-भाले आदिवासियों को ठगने के लिए उन्हें किलो भर शहद (जिसे वे पाली कहते हैं) के बदले नमक देते थे। इस प्रकार उनका शोषण करते थे।

बाद में शोषण से मुक्ति के लिए सरकार द्वारा उस क्षेत्र को प्रतिबंधित क्षेत्र घोषित कर दिया गया। मैं जब इस पारिवारिक हादसे से गुजर रही थी तो मेरे मन में विचार आया कि मैं अपने दुख से तब मुक्त हो पाऊँगी जब दूसरों का दुख बाँटूँगी और इसी लक्ष्य को लेकर मैंने उस आदिवासी क्षेत्र में परियोजना अधिकारी के रूप में प्रवेश किया। माताओं एवं शिशुओं का स्वास्थ्य सुधार, शिक्षा, अंधविश्वास से मुक्ति, स्वच्छता, कृषि की जानकारी, समाज की मूल धारा से जोड़ने के लिए शिक्षण आदि अनेक प्रकार के कार्यक्रम किये। और भी बहुत सारी रोजमर्रा के जीवन की बातें सिखाईं। इससे उनके जीवन स्तर में काफी सुधार हुआ है।

इन सब प्रयासों के फलस्वरूप हमारी संस्था का राष्ट्रपति पुरस्कार के लिए चयन हुआ। दूसरों को सुख देकर मैं अपना दुख बिल्कुल भूल गई। जब मैंने नि:स्वार्थ भाव से आदिवासियों की सेवा की तो भगवान ने भी मुझ पर अपनी कृपा बरसाई। मैं सन् 1994 में ब्रह्माकुमारीज़ के संपर्क में आई और सन् 2006 में मैं पहली बार अव्यक्त बापदादा से मिली। उस अलौकिक मिलन में मुझे लगा कि मैं चेतन गंगा में डुबकी लगा रही हूँ। अखंड शांति की अनुभूति हुई। शरीर का भान भी जैसे भूल गई। मुझे इस दैवी परिवार का बेहद स्नेह मिला।

मेरे अनुभव का सार यही है कि वर्तमान समय अनेक युवतियों के वैवाहिक जीवन में अनेक उतार-चढ़ाव आते हैं और वे डिप्रेशन में आ जाती हैं। मैं उन्हें सलाह देना चाहती हूँ कि जीवन में एक मार्ग ही नहीं, अनेक मार्ग हैं। अगर एक मार्ग किसी कारण से बंद हो जाता तो अनेक खुल जाते हैं। दुखियों को सुख देने, बेसहारों को सहारा देने, गिरे हुओं को उठाने तथा अबला को सबला बनाने के दरवाज़े तो सदा ही खुले हैं इसलिए कठिन घड़ियों में निराश होने की ज़रूरत नहीं है। आज मेरा जीवन खुशी व आनन्द से भरपूर है। मैंने समाज को जितना दिया है, उससे कई गुणा अधिक पाया है। इसलिए मैं अपने जीवन की सामाजिक व आध्यात्मिक उपलब्धियों से पूर्णतया संतुष्ट हूँ। ❖

लालच और मृत्यु

● ब्रह्माकुमार रामसिंह, रेवाड़ी

लोभ करने वाला कभी सुख नहीं पा सकता। वह लोभ के जाल में सदा उलझा ही रहता है। वह धन और वैभव जुटाता तो रहता है लेकिन इस जुटाए हुए धन से किसी का कल्याण नहीं कर सकता। अपना भला भी नहीं कर पाता है और एक दिन सब कुछ छोड़कर लोभवश किये गये पापकर्मों का बोझ लेकर संसार से कूच कर जाता है। तभी तो कहा है, 'लोभी सदा कंगाल है' और 'लालच बुरी बला है।' इस संबंध में एक कहानी है

किसी नगर में एक लालची आदमी रहता था। उसके पास सभी प्रकार की सुविधायें थी। धन के बल पर वह जो चाहे प्राप्त कर सकता था लेकिन उसके कोई संतान नहीं थी। धीरे-धीरे वह वृद्धावस्था की ओर बढ़ने लगा परंतु धन-संपत्ति की चाहत में अंतर नहीं पड़ा। एक रात बिस्तर पर पड़े-पड़े उसने देखा कि सामने कोई अस्पष्ट-सी आकृति खड़ी है। घबराकर उसने पूछा, कौन? उत्तर मिला, मृत्यु और फिर आकृति अंतर्धान हो गई। वह उठ बैठा, उसका हाल-बेहाल हो गया। उस दिन के बाद जब भी वह एकांत में होता, वही डरावनी आकृति (मौत) सामने आ जाती। उसका सारा सुख-चैन हवा हो गया और चेहरे का रंग पीला पड़ गया। वह वैद्य तथा डॉक्टरों के पास गया लेकिन कोई लाभ नहीं हुआ। ज्यों-ज्यों दवा की, रोग घटने की बजाय बढ़ता ही गया।

लोगों ने उसकी दशा देखी तो उसे नगर के उत्तरी छोर पर तपस्यारत महात्मा जी के पास जाने की सलाह दी। व्यक्ति ने रोते-रोते महात्मा जी से प्रार्थना की, महाराज, मौत मेरा पीछा करती है और इस प्रकार सारी आपबीती कह डाली। महात्मा जी ने कहा, भले आदमी, लालच और मृत्यु दोनों परम मित्र हैं। जब तक तुम लालच करते रहोगे, मृत्यु सामने ही खड़ी दिखाई देगी। मृत्यु के भय से छुटकारा तभी मिलेगा जब तुम लालच का पल्ला छोड़ोगे।

व्यक्ति ने गिड़गिड़ाते हुए कहा, महात्मा जी, मैं क्या करूँ? लालच ऐसा है, जो छूटता ही नहीं। महात्मा जी बोले, कल से ही तुम एक हाथ से लो, तो दूसरे से देते भी रहो। मुट्ठी मत बाँधो, हाथ को खुला रखो। कुछ ही समय में तुम्हारा यह लालच रूपी रोग दूर हो जायेगा।

महात्मा जी की बात मानकर उस व्यक्ति ने ऐसा ही किया और एक नये जीवन का आरंभ किया। उसका लालच रूपी रोग दूर हो गया और अथाह सुख-चैन भी मिल गया।

यह तो एक व्यक्ति की कहानी है लेकिन इस संसार में कितने ही लोग हैं जो तन-मन की अनेक व्याधियों से ग्रस्त हैं। इनका निदान डॉक्टरों के पास भी नहीं है। ये व्याधियाँ गलत सोच, कर्म और व्यवहार का परिणाम हैं। **जैसे सेठजी ने संग्रह के बजाय सेवा में लगाकर सच्चा चैन पाया। ऐसे हम भी प्राप्त धन-साधनों को परोपकार में लगाकर सच्चा चैन पा सकते हैं। यदि संचित करते जायेंगे तो शरीर में रोग भी संचित होते जायेंगे।** यदि ईश्वर की मत पर नहीं चलेंगे तो डॉक्टरों की मत पर चलना पड़ेगा। ईश्वर-दर्शन के बजाय डॉक्टर-दर्शन करना पड़ेगा और ईश्वर अर्थ दान-पुण्य की बजाय डॉक्टरों पर चढ़ावा चढ़ाना पड़ेगा। अच्छा यही है कि हम गुणों का संग्रह करें, धन का नहीं। ❖

संस्कारों की रास मिलन एवं निर्विघ्न जीवन

● ब्रह्माकुमारी जयश्री, मुंबई (विक्रोली)

अचानक सामने आने वाले विघ्नों के बीच से जीवन की नैया को पार ले जाना बहुत बड़ी चुनौती है। कुदरत द्वारा विघ्न आते हैं परंतु उनके सामने व्यक्ति विवश है। संबंध-संपर्क द्वारा जो विघ्न आते हैं, उनमें अपनी ऊर्जा, समय, गुणों को लगाकर उबरने की गुंजाइश होती है लेकिन जब स्वयं के संस्कारों से विघ्न निर्मित होते हैं तब अपने हाथ से, अपने पैर पर कुल्हाड़ा मारने जैसा अनुभव होता है।

मनुष्य संगठित रूप से खुशियों का आदान-प्रदान करने वाला प्राणी है। स्नेह और खुशी एक-दूसरे को बाँधकर रखते हैं। अगर किसी कारण से स्वभाव-संस्कार का टकराव और फिर तनाव होता है तो उसका परिणाम फिर चेहरे पर, शरीर पर दिखना आरंभ हो जाता है। परंतु जब हम महसूस करते हैं कि हम स्वयं ही अपने सुख-दुख के लिए ज़िम्मेवार हैं, तब हम अपनी आदत, कर्म तथा विचारों को ध्यान से जाँचना शुरू कर देते हैं और यहीं से शुरू हो जाती है संस्कारों की रास मिलन। संबंध-संपर्क को स्नेह से दृढ़ रखने के लिए अपनी कुछ आदतों पर आइये गौर करें –

1.बहस करना:– विचारों का आदान-प्रदान करते समय कई बार अंदर की भावना बदल जाती है। आदान-प्रदान करते-करते हम कब बहस पर उतर आते हैं, पता भी नहीं चलता है। आवाज का स्तर बदलने लगता है और चेहरा भी। फिर मन कहता है कि यह अपने आपको समझता क्या है। **फिर हम स्वयं को सिद्ध करने के लिए थोड़ा ज़िद्द पर उतरते हैं और सामने वाला भी उस बात को काटकर जीत का अनुभव करना चाहता है लेकिन यह कनिष्ठ आनंद ज्यादा समय नहीं चलता क्योंकि हार महसूस करने वाला व्यक्ति नये मौके की तलाश करता है और बहस, झगड़े का रूप ले लेती है।** इससे बचने का उपाय यही है कि उस वक्त अपने आप पर नियंत्रण रखें। अगर सही बात करना ज़रूरी ही है तो सामने वाले का सम्मान रखते हुए, अपनी कथनी के पीछे की भावना शुद्ध रखें।

2.दोष देना:– सबसे आसान होता है दूसरे को दोष देना, मतलब अपनी खुशी को खुद मार देना। फिर रोयी आवाज़ में सुनाते हैं कि यह सब तुम्हारी वजह से..। लेकिन सही शब्दों में कहना यही चाहिए, 'मैंने स्वयं को दुखी किया है।'

3.अनुमान लगाना:– अनुमान का कोई भरोसा नहीं होता, अनेक बार वह ग़लत निकलता है और बाद में उसकी कीमत चुकानी पड़ती है। अनुमान लगाने की प्रक्रिया में आंतरिक शांति हिलने लगती है। मन की शांति और स्थिरता हमारी पहली प्राथमिकता है इसलिए इस आदत को महसूस कर, चुनौती देनी होगी। जब किसी को पता चलता है कि हमने उसके बारे में गलत अनुमान लगाये हैं, तब वह कैसे हमें अपना शुभचिंतक समझेगा और हम पर विश्वास करेगा। हमारे प्रति उसका स्नेह, सम्मान भी खत्म हो सकता है जिसकी पुनः प्राप्ति के लिए बहुत मेहनत करनी पड़ेगी। इसलिए इस आदत को समाप्त करें।

4.आलोचना करना:– किसी की आलोचना या निंदा करना उस पर प्रहार करने जैसा ही है। निंदा भी व्यक्ति तब करता है जब कोई बात उसकी मनचाही नहीं होती है, फिर उसे क्रोध आता है। कई तो स्वीकार ही नहीं करते कि वे निंदा करते हैं, वे तो अपनी बातों का समर्थन कर उन्हें रचनात्मक विश्लेषण की उपाधि देते हैं। आलोचना अगर क्रोध से युक्त है, तो बदला लेने की भावना प्रबल हो जाने से अंदर का सुख चला जाता है, यह बहुत बड़ा नुकसान होता है।

5.शिकायत करना:– शिकायत करना किसी-किसी की संस्कृति बन जाती है परंतु यह भी मानसिक

अस्वास्थ्य की सूचक है। अगर शिकायत महत्त्वपूर्ण है तो उसे निवेदन या सूचना के रूप में, नम्रता और सद्भावना से, योग्य शब्दों में प्रस्तुत करें। इससे असंतुष्टता का या अहंकार का आभास नहीं होगा। इस आदत से व्यक्ति तब सावधान होता है जब संतोष धन की हानि महसूस करता है। जिसकी शिकायत करते हैं वह हमें शुभचिंतक के रूप में नहीं देख सकेगा, फिर संबंध में विश्वास कमजोर पड़ेगा। बिगड़ता संबंध अनेक जगह घाटा कराता है।

6.बराबरी करना :– दूसरों के साथ विविध बातों में बराबरी करने की कोशिश करना माना स्वयं को दुखी करना। कई कहते हैं, उन्नति के लिए प्रतियोगिता अच्छी होती है। लेकिन इस तरीके की प्रतियोगिता में, तनाव एवं चिंता का अनुभव बहुत होता है, बराबरी करने के दरम्यान एक भय रहता है कि कहीं मैं पीछे न रह जाऊँ या कोई मेरे से आगे न चला जाये। इसलिए परमात्मा कहते हैं, दूसरों की मेहनत से प्रेरणा अवश्य लें परंतु अपनी भूमिका को समझ स्वयं से ही बराबरी करनी है। इसमें संतुष्टता है और सुरक्षा भी। किसी को भी आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित करना अनेक प्रकार से सच्ची कमाई है।

7. दूसरों पर नियंत्रण करना:– हम जैसा चाहते हैं, वैसे दुनिया चले, यह अपेक्षा हम नहीं रख सकते। किसी व्यक्ति को अपनी उंगली पर नचाना बड़ा कठिन है। हम ऐसा इसलिए करना चाहते हैं क्योंकि उन्हें हम अपने सुख के लिए ज़िम्मेवार समझते हैं। अगर हरेक यह समझे कि हम स्वयं ही अपने सुख दुख के लिए ज़िम्मेवार हैं तो दुनिया का स्वरूप ही कुछ और हो जाये।

इस प्रकार हमारी अनेक आदतें हैं, जिनका संबंध संस्कारों के तालमेल और रासमिलन से है। हम कौन-कौन-सी आदतों से प्रभावित हैं, यह अगर हम शांति से बैठकर देखेंगे तो काफी हद तक हमारा जीवन निर्विघ्न बनेगा और हम स्थायी सुख और खुशी के अधिकारी बनेंगे। ❖

ग्लोबल अस्पताल, माउंट आबू में जटिल से जटिल ऑप्रेशन की सुविधा उपलब्ध

ग्लोबल अस्पताल में अब जनरल, लेप्रोस्कोपिक, बाल एवं शिशु रोग सुपर स्पेशलिस्ट सर्जन डॉ. दिगन्त पाठक (एम.एस.एम.सी.एच.) की सेवायें 24 घंटे उपलब्ध हैं। निम्नलिखित बीमारी से ग्रसित मरीज इस सुविधा का अवश्य लाभ लें।

जनरल एवं दूरबीन सर्जरी – हर्निया, अपेंडिक्स, हाईड्रोसिल, गले, छाती, स्तन, पेट एवं अन्य अंगों की गांठें, पित थैली की पथरी, आंतों की रुकावट, फटना, गांठ, कैंसर, खाने की नली (आहार नली) की रुकावट, कैंसर, खराबी, पेंक्रियास ग्रंथि की बीमारी, तिली बढ़ना, पाईल्स, फिशर, फिशटुला।

गुर्दे एवं पेशाब/पथरी ऑप्रेशन – गुर्दे, पेशाब नली, पेशाब थैली की पथरी, प्रोस्टेट का बढ़ना, पेशाब नली की सिकुड़न/रुकावट/चोट, गुर्दे, लिंग, अण्डाशय का कैंसर, पेशाब में रुकावट, बार-बार पेशाब आना, पेशाब का टपकना, पेशाब में खून आना, गुर्दे में सूजन, रुकावट।

नवजात एवं बाल रोग सर्जरी – मुँह एवं गले की गांठ, छाती एवं फेफड़े के ऑप्रेशन, हर्निया, आंतों की रुकावट, उल्टियाँ होना, नाभि में खराबी, मवाद, खून आना, खाने की नली की खराबी, लिंग की खराबी, पेट में एवं शरीर में कहीं भी गांठ, गुर्दे में पथरी/सूजन, गुर्दे में रुकावट, कमर का जन्मजात फोड़ा, सिर में पानी भरना, पेट, छाती, फेफड़े, गुर्दे, पेशाब संबंधी ऑप्रेशन।

संपर्क करें – डॉ. दिगन्त पाठक, मो. 9887489405

समय: दोपहर 3 से 5 बजे तक

समय पर मिली मदद

● ब्रह्माकुमारी आकांक्षा, दिल्ली (मालवीय नगर)

मुझे ज्ञान में आये तीन वर्ष से ज्यादा हो चुके हैं। मैं भक्ति बहुत करती थी परंतु मुझे ब्रह्माकुमारीज़ के नाम से इतनी चिढ़ थी कि कोई इस संस्था के बारे में बात करता था तो मुझे अच्छा नहीं लगता था। कारण था इधर-उधर से सुना हुआ कि ये सब कुछ छुड़ा देते हैं। लेकिन मेरा विवाह एक ऐसे परिवार में हुआ जो ब्रह्माकुमारीज़ में जाता था। किसी को निमित्त बनाकर बाबा ने मुझे आबू बुला लिया। मैं वहाँ केवल घूमने के मकसद से गई थी, ज्ञान का कुछ पता नहीं था पर बड़ी शान्ति व आनन्द का अनुभव हुआ। श्वेत वस्त्रों में यहाँ घूमते भाई-बहन फरिश्ते लग रहे थे और सभी अपने-से महसूस हो रहे थे। बाबा का कमरा, बाबा की कुटिया, बाबा का शान्ति स्तंभ सब अपनी तरफ आकर्षित कर रहे थे। एक अजीब-सी कशिश थी वहाँ। मुझे क्या मालूम था कि यह सब बाबा का कमाल है।

वापस आने की तैयारी करने लगी तो मन नहीं कर रहा था ऐसे स्वर्ग को छोड़कर आने का। ऐसा महसूस होने लगा कि कुछ मुझसे अलग हो रहा है, आँखों से अश्रुधारा बह रही थी। घर आने के बाद तो बस मधुबन का ही ख्याल रहता और वहाँ की खिंचावट होती। घर के पास ही ब्रह्माकुमारी का सेवाकेन्द्र है, मैं जाने लगी। इस प्रकार मैं और मेरे युगल हम दोनों ही बाबा के बच्चे बन गये।

बाबा की मदद का अनुभव

जब बाबा के बनते हैं तो बाबा मदद करता ही रहता है। एक विशेष अनुभव के बारे में यहाँ बताती हूँ। मैं सरकारी दफ्तर में कार्यरत हूँ। एक दिन रजिस्टर द्वारा मैं जरूरी कार्य कर रही थी। इसके बाद उसे वहीं रखकर घर आ गई। अगले दिन जब कार्यालय पहुँची तो देखा कि रजिस्टर मेरी टेबल पर नहीं था। बहुत ढूँढा और ऊँच अधिकारी को भी बताया। सब वरिष्ठ बहुत नाराज हुए, कहने लगे, कहीं से भी ढूँढ़कर लाओ, नहीं तो नौकरी से हाथ धोना पड़ेगा। मैंने उन्हें बताया कि किसी ने जानबूझकर गायब किया है, पर कोई सुनवाई नहीं हुई। मैंने बाबा को अपनी सारी परेशानी बता दी और हलकी हो गई पर थोड़ी चिन्ता फिर भी थी। मुझसे लिखत मांगी गई, मैंने बाबा को याद करके सब सच-सच लिखकर दे दिया। सबने मुझे कहा कि आप साफ मुकर जाओ कि रजिस्टर आपके पास था ही नहीं पर अंदर से आत्मा गवाही नहीं दे रही थी कि झूठ बोला जाए। कार्यालय में मेरे खिलाफ कार्यवाही शुरू हो गई।

मेरी रिपोर्ट फाइल सतर्कता विभाग में भेजी जाने वाली थी। मेरे अधिकारी ने मुझे बुलाकर कहा, फाइल विजिलेन्स में जायेगी, उससे पहले एक बार और ढूँढ लो। मैं उम्मीद से पुनः ढूँढने लगी, तभी 12 बजे के ट्रैफिक कंट्रोल का समय हुआ, मैं बाबा को याद करने लगी और कहा, बाबा, अब तो आप ही कुछ करो, आपका वायदा है कि दिल से कहो, मेरा बाबा, मेरे साथी मदद करो तो बाबा मदद के लिए दौड़ा चला आयेगा। बस, ऐसा कहकर मैंने आँखें खोली और पुनः रजिस्टर ढूँढने लगी। अचानक मेरी नज़र सामने रखे रैक पर पड़ी, एक उसी तरह का रजिस्टर वहाँ रखा था। मैं दौड़ी, यह वही रजिस्टर था। **मैंने बाबा को दिल से धन्यवाद दिया, कहा, बाबा, आपने अपने बच्चे की लाज बचा ली। दिल ने गाया, ईश्वर अपने साथ है तो डरने की क्या बात है!** बाद में पता चला कि कार्यालय में किसी ने ईर्ष्यावश व वरिष्ठजनों के समक्ष मेरी छवि खराब करने के इरादे से वह रजिस्टर छिपा दिया था। बाबा पर अटूट विश्वास के कारण मेरा यह विघ्न पहाड़ से राई और राई से रूई बन खत्म हो गया और मैं एक भारी मुसीबत से बच गई। ❖